* 757

क्रमम कामिनी।

न निवन एपील दुवन कारा।

্রাজকৃত যোগ কর্ড ক

MO TO

शैर्ड कि शिष्ट्रवन भारतात

বনিক্তা।

भागा । श्रीरके कर मन सरश्य करण दे जिल्लाम प्रकृतिकान परस्य मुख्य

जन ३३% जाता।

মুড়ীপুর 🖟

ৃমিক)	7 3
রাকপুত্র ও যোগীর বিবরণ	, a
ন্ত্ৰপুজেন গহিত যোগীৰ কথোপকখন	\$5.
চোগী কন্তক কামিনীয় রূপ বর্ণন	50
যোগীর নিকট হইতে কুমনেং বিদায়	\$8
ুমদের কান্তিপ নাবে উপনীত ও সহচ্চীলণ কর্জুর	;
बारहा भाव वर्गम	34
কুল্পমেশ্বনের বিনলা ভাতিনীর নায়ত লাক্ষাৎ	Įr.
विभवान भिकटे कुमरन्त्र कामिनीय शक्तिम किन्द्रामा	20
कूमानत विचनात निव्ह करश्र वसम व सारकण	4,8
कामिनीय मिक्ट्रे नियमाद गम्म अकुनटम्ब शहितन	20
কামিনীর কোটালগদের এতি আদেশ	; <u>;</u>
क्रूमरण्य त्रभगेत अल यादन ७ काभिनीत गरिक भिला	K.F.
कुमन कामिनीय विवाध	2 de .
কামিনীর রহাক্ত	23
কুনদ কামিনীর রহাত্ত	23
कामिमीत कुमरण्य गश्कि हुङ्ख	09
कूशन रामिनीत विदात आहाउ	th
কামিনীর আক্ষেপ	24
ক্ষনক মঞ্জরীর রাণীর নিকটে গদদ	27.
क्रिमीत क्रिक महिसीत उर्भना	80
য়াশার কোটালগণের প্রতি আনেশ	59
কামিনীর আক্ষেপ	87.
कामिनीत विनाश ७ क्मरमत हात्र यत्र। आरक्ष छेळि	47
চোরের রাজগভায় কথোপ কথম	47

· 변취역표 : ,	
বিষলারে রাজনভার আনিতে রাজার আদেশে ব	9
टब्स छे। जर्शहरू श्रम्म	48
िवम्ला <mark>टन टेलग्ना टक्क्</mark> लियादश्व जावास साथ छिलासीय	3 3 3
কুনদের হাজাঁই নিকটে আনক্ষণ	? &
कालपुरक्षक रम जिल्ल कि झर्के । अस	68
লে, বির গ [্] চত জুম লে র কর্মোপ্রকর্ম	65
ক্ষুস্থান্ত বহিত যোগত হাজ নভার তিপরীত	4:
ভূমণ জামিনীয় ল'বা কর্ত্তক বিতাহ	18.9
ু হল বাহিমনীর বৃহত্ত	**
ভুম্পদেশ্যনের রাজার শিক্ষাট স্বাপেশে শাইবার ব	द्रवर्ग सा ५३
अ, भिनी जोश्क कुमल्टमाइटमत दि तह	£,
कुरम कर्रियोत कर्षीयास्य मध्योत क सनि मही	रहे के दिल
न दिल सुभावन व मा महीह	· dyn
্ল্যাদের স্থানু ক্ষপ ও মণির কি.শ ার্টীর দিলাই জুগ	14.8%
46.52	36
कुंभर्भव लिएम्। भीत अधिक विकास के किरमा ही व स	打選的 争
कुमारत निकास किरणातीय ४००० सेलि ज्यारत है।	
কুঘদেন নিধিতে কিলোগীর দাসে এমদ	ir :
एमम कि लाई वि हर्गक व रिवाह	5 C
সূমৰ কিশোমীৰ দাৰ	5-1-
কুমপের অন্মভক	20
भतित क्षिमीटक किएमानीत शनिक्र	35
ক্ৰিন্ত কিলোৱীৰ সহিত বিবাহ ও তিন্তি আৰে	हर्स के
কানিনীর কিশোরীর সহিত বহাস্য	45
मुमन(पार्ट्सिड अ)टक्क अ इति अटिहार्ग	` > •
পুন্মদ্মোগ্নের স্কুরাট নগরে উপদীভ	2.5

ভূমিকা।

অসতা নগতে বাস, ভারতিমি স্কুপ্রকাশ, জাভিতে কায়ত্ব কিভিপতি। प्रदेश(श) प्रश्नाह, मर्क लाटक प्रसा कश, প্রভাগে সমান লগোপতি।। ভাল পাল্লা জ্বাড়িবার, ত্রাধীবারে সাব্য কাণ্ড, कृदश भीटम मुकारतम सुक्ता । শিল্ড মিশিয় চলের, ইন্দ্রির জান হয়, कारिक कारिक कार्की कर्रीत शास । কালে বেলিকে কালাক **ক্ষতান্ত** গুটা সন্তাম, প্ৰকাৰে বাবে বাছিলতে ৷ ্যার্থক প্রাসাধ কড**ে ভ্রমিকেছে আ**র্যার্থত, বিকাপী মিবিকে ছাতে প্রাচি त्ररदेत भारत भारत भुषानिनीख ज्ञान्याच्या ্ৰহালম বিভালম কভ। গরি অংশ অবশ্র, সভার ব্রুরগর, প্রমিরেটে দুগ আঙ্ সভ্ বিলক্ষের মা'হ্ ংকে, দালায়ে পাছত ককে, र्वेशिक कहत इराय्य काउं। वारत । শিষ্টের সদা পাল্ড, করে অর্থ বিভর্ত भीन भीन गहिम भगदित ।

সূত সম একাগনে, পালন কলে ধ্রুদে, ন-কি জুংপার[স্ফোর ভিতর

1 :

गण वर्ष वर्षका, लक्ष्म कार्य कार्या गर्नानटक (मन्न द्रांक करा। বাশে রাজ রাজেশুরী, বিরাজে কেশ্রী পরি, मगपुका एल्ड नामिनी : मृत्यित बुधन वांनी, खरा मम बीगायाने, ৰূপে রঙা ভিলোভ্যা জিনি॥ নাহি নুগতির সূত, সূত বিলৈ ছঃখযুত, मन । कट्ड देनद खाडांधना। নানা এছ নানা মতে, করে মুপ শান্ত মতে, सूड लागि नम्ड ভार्यमा।। च्छ्रधद्वह मद्दापती, माणा नही सूक्ष्मती, धमा धमा नाती रुलि काटत । ায়ি দহ ভাগেপতি, আনি আপন বদতি ভাগিলেন সুখের পাথারে॥ किছु मिन भारत भक्ती, 'शहरमन गर्डवर्टी, পরে প্রস্থিলেন কুমার। महामत्क महीशाल, दाथि नाम तामलाल, সদা কাছে রাথে আপনার।। नी नत्या ग्रुथम्मी, (श्टत श्ट्र मन मनी, অপকৃপ সরোক লোচন। করি শুগু সম কর, বিম্ব জিনি ওষ্ঠাধর, বর্ণ সম তরুণ অরুণ। কিছু দিন পরে পুনঃ, প্রকাশিয়া কহি শুন, পুনঃ প্রস্বিলেন নন্দন।

বনরারিলাল নাম, নামা গুণে গুণধাম, নাম ভার রাখিল রাজন।।

রাজ্য ভার ভাগিমায়, সমর্পণ করে রায়, जीर्थ भर्सिकेत्व अधिनाती। লয়ে পাত্ৰ মিত্ৰগণ, ভাজে মিজ নিকেভন, शमन करतमे सूर्थ जानि ॥ দৈন্য সামন্ত সহিত, আদি গুরু পুরোহিত, क्षनवत् राजा (मर्भ (मर्भ। जमा कामार्तित ध्वनि, कन्त्रिक इरला ४वरी, हरल मरव स्टाइ प्रारम्टम ।। ক্রি অশ্ব অগণন, সংখ্যা করে কোন জন, ছাতি জান দেশ কত শত। দিবা অস্ত হলো পরে, নকলে বিশ্রাম করে, বিভাবরি ইইল আগত।। পার নিত্র রয়গণ, আসি নৃপের সমন, শাস্তালাপ করেন সকলে। করিকুল চুড়ামণি, কারাচাদ শিরোমণি, কহিছেন পরিহাব ছলে।। অবনীতে হারা দার, মনোনীত আছে যার, काशिकत सूची (महे जन। গুলে সাধ্যা প্রিয়া সভা, ভাগ্যবভী গুণবভী, হিত চিস্তা করে সর্বক্ষণ।। र्त्तांग नाम्बद्ध, নূপের প্রধান রত্ন, সমাদরে কন নুপবরে। কামিনী নামেতে পতি, ৰূপবতী ছিল ছাতি, धना धना बाना किछिशदा। ठक्ष हु मृश्यत्र, বান কান্তিক নগার, তীয় স্থা ছিলেন কামিনী।

कुगमरभार्न नाम, सूत्रां ने नहात थान, স্থরেশ নূপের সুত জিনি।। মনো ছঃখে আপনার, তেজে নিজ অধিকার, महांत्रा कर्तन जम्। কিছু দিন পরে রায়, একাকী ভ্রমি ভ্যায়, पि चिटलन धारी कर छन।। চুজনার গেল ছাখা হেরে ছজনার মুখা थारन इटक छेठि । याजीवत । धिकानित्वम शक्तरः, कि योग्राम अकामतः, জমিতেছ হৈছি একেশ্র। কোখা বাদ কিবা নাম, কং মোরে অগ্রান, (कम । इति दिवन रहन। কার জ্বর্থে পেরে ৯:খ, সুখারেছে চন্দ্র্য कः प्यादि कृति निरंत्रम्म । গোদীবরে ৬ মিছে, কহিলেন বিশেষিয়ে, নুপসুত চুঠে আপনার। শুনে (ঘাণী বিধরণ শাশু করি ভার ঘন, লিখিলেন কাছে আপনার।। জামিনীর বিবরণ নাপ সুতে যোগী কন, खाइ क्रम क्वित्य वर्गन। কুমদ্যোহন তার, 🧪 গুনি ৰূপ চমৎকার, কান্তিকেতে করেন গমন।। विश्टर रुख कांछ्य, जना विनाम व्यख्य. নাহি নিত্রা কুধা ভূষী। ভার।

বিনলা নামে ভাঁতিনী, মিলা**রে দিল কা**মিনী, বাঁদা দিল বা**নে আপনা**র।।

সাজায়ে কুমদে নারী, সে শোভা বর্ণিতে নারি, লয়ে যত নিত্য বিভাবরী। नुश्रयात्म मरशाश्राम, नुश्र सूर्वात महत्तः লুকাইয়া যতেক প্রহরি॥ अक विनी टेम्बांबीय, मर्साधिक इम्र शैन, রফবদে মাত্রে ভুজনে। कल इत्त तक मी, हू छेनिक निममनि, मश्नरम जात्न नाहि भत्न । পরে জাগি দাসীগণ, । হেরে কুমদ বদন, নিবেদিল নূপের নদনে। ্নিয়ে ফোংগ রাজন, ্রুমদে করে বন্ধন, কারাগারে রাখে দুভগণে ॥ নুপত্ত মৃত্ভানে, আনি যোগী নুপবারে, োগী চুঃখ করিল মোচন। খোণীবর নুপ্ররে, বিদয়ে সাক্ষ্মা বরে, क्गरमत कन विवत्न।। শুনিষে ধরিণীপতি, স্ইয়ে আনস্ফ করিন কামিনীর দিলেন বিবাছ। कु मनद्याहम जटा, जानत्क निष्धा स्ट्रा, कुन कार्य। करव्रम निकार।। কুমদমোহন রায়, থাকিবে সুখে ভংগয়, নিজ বালে করেন গখন। চন্দ্রচুষ্ণ নৃপবর, হরে হরির অন্তর, कांगडादित मिल तह्थम।। কামিনী আনন্দে ভাষী, সঙ্গে লয়ে ছুই দাসী,

চলিলেন নাথের ভবনে।

কুমদ কামিনী।

करह তति चारतांश्य, कुमनस्माहन कन, খুলিবারে নেকি। বাহিগণে।। প্ৰন্দম গ্ৰহন, 🐪 বাহিছে নাবিকগণে, কাশীধানে হল উপলিত। भावीक नकरल बाध, कबिल छथा निषाय, বঞ্জে কুৰে কাৰিনী সহিত। কহি শুন ভাগাংৱ, স্টানুকান্ত সদাগ্র, ৰামেতে ভাছিল ধনস্ক। कीरमाति गारमरण कमा।, बरलरक पत्रवीधनाः, ভূষ ভার কামের কামান।। নম্ম কটাক্ষ লাগ, হেরিলে সে হরে প্রাণ, বেক ১৬) ব্য ক্রড আর (ভিল দুল যিনি ম্পা, পিক্ষৰ যিনি লাম, ात पुरा भाति सारि धाता। গটে হেরে গার কপ, ভারে হত নবভান, मरण दृश्य आंकृत अध्व लक्ष्यां भरत छुड़े करन. भिलन इत्ता यकान. মলেপুথে ভূজে মিরস্তর।। काशिमी विशिष्ठ मर्मा, माबिट्ड आपन कर्म, কালোরিরে বিবাহ করিল। नुकारत्र जालक भारक, हुई मोत्री लएव वास्यः माही श्राम श्रीकारन इनिन।। লয়ে কামিনা কীশোরি, কাশীধাম ভাজা করি। চলিলেন আপন ভবন। कम्मद्रशाहन द्राह, क्रिय मुख्य विमाध, উপ্নিত জনক সদ্ম !!

कुमन काभिनी।

হেরে কুত নৃপবর, হয়ে হরিষ অন্তর,
দীন হীনে অর্থ বিতরণ।
হলো সুথি প্রবাসী, আনন্দ,সাগরে ভাসি,
জন্মনি করে সর্বজন।
জন্মনার বরন, করিয়ে ধুগল কর,
প্রণতি করেন কবিবরে।
কামিনী কুমারি ধনা।, সাধ্যা সতী মহামানা।,
জুলা নাহি জন্মী ভিতরে।।
কবিবর কন রাম্ন, ইতিহাস হল সাহ,
জাইনিত হেরি দিবাকন।
নৃপোর বিসর্থান, করিল সতে গ্রমন,
নৃপোর পানেশে স্থান্তর।।
ধামিনার বিশ্বাস, রাজক্ষণ ক্লেকাণ,
বিশ্বিদ্যা ভাবিয়ে ভ্রানী।
এই ম্মানিবেদন, সমীপে স্ক্লেপ্থন

দীৰ দীৰ বলিতে কি জাৰি !!

কুমদ কামিনী নামক গ্রন্থার । ।

রাজপুত্র ও যোগীর বিবরণ। নিহঁতি কাননে যোগ করে যোগী**বর।** জন খুন্য সেই স্থান থাকে একেশ্বর।। এডাইবে নালা দেশ পর্যন্ত কানন। कुरुवि नात्कव इत्य ज्ञान व्यक्त ॥ উপনীত নেই খানে বাণ্ডি অংক্সণে। চের্থন ভেল্লাট্রাণী ব্রের্থালাস্ট্রট জন্মিয়া নুগায়ু বা ভাষেন অঞ্চলে স আর্ডি খন কুপ্রভাত এছদীন পরে । গছ নীৰ ভাষি খ্যামি ফাননে কান্দ্ৰ। द्दलक्षा रूष्ट्र क्ष्मिना द्विये नध्रद्य ॥ রবির সমান জ্যোতি কান্দ ভিডরে। ম্বিময় দীপ্তময় নল্লাট উপরে।। धुरिक श्रेष करें। शहर ए जूटमर छ। সাপিনী ভাপিনী জিন শোভিছে শিরেতে ।। কটাক্ষ করিয়া রায় কন যোগীবর। কে তুমি একাকি এলে কানন ভিতর।। কিব: নাম হয় তব কাহার ভন্যা কি আন্দে এনেছ হেথা কোখার জালয়।। কহ নোৱে সভ্য বাণী সাধুরনন্দন। मन दूरशी (मधि (कन विद्यवपन।।

कूमम कामिमी।

द्रांय उटल कहि छम मम विरंत्र। ्द्रतिष्ठे मोट्यटक तीका सूटतय तीकम।। •ভাঁহার ভনম আমি গুন মহাশয়। কুমদমোহন নাম স্তুবটে আলয়। तक्षुत विराष्ट्रिक व्यामि जिमि नितस्तत । তেলে ঘাম করে বাম কানন ভিতর ॥ যতেক ক্ষমধন ছিল সম দেলে। व्यर्थ भीम दश्बी स्मादत खुष्ड्र करत स्मादय ।। স্থীয় মনে বালী লাজ ভাগার কারতে : দিব: বিভাবরী থাকি স্কল নয়নে গ বোখাও না পাই ধীর জ্ডাতে জাবন। বলার বিভেনা নাল পড়ে বদা মন । কি ক্রি কিনে নিবার্ত্ত মনেত্রি থানল। व्यक्तिभित्यं मस छात्यं भार (म धामल । জাণ্ করেছি লায় ধন ভামি যত। कुगाञ्च कुभाषा सभ छिख इदह वक ।। এখন ভালিতে গেলে পা্বাণ বিদ্ধে ! ধরণী হুফাক হলে প্র**বেশি ভিভরে** । মনেতে ভেৰেছি লাও মেই প্ৰাৎপৰ। অসার সংসার মাজ কতা যোগোপর।। ধিকুরে প্রেমীকগণ বন্ধ মায়। জালো। বারেজ মা কর চিন্তা সেই নক্ষলালে । যার নামে ভবে নর সুথে হয় পার। হারে ভাবি রালক্ষম রচিল প্রার ।

রাজপুত্রের সহিত যোগীর কথোপকথন। পদার।

ক্ৰিয়ে ক্ৰেন যোগী গুন ছে **রাজ**ন। ভাহার কারন কেন এত উচাটন।। टेथर्यायम टेक्सीयन कार कश्रीटम । जमा क्रभ (गई मांग প्রম হরিছে।। युर्थंद्र मगन्न २३एल भिरता सञ्जागः : ত বের সময়ে বজু মেলা চুর্ঘটন।। থাতএর কই শুন ওহে দরেশর। ্ৰেম্প গ্ৰাম কর হওমা কাছর ॥ এখানে প্রতিপ্র জবি প্রায়ের জীলন। গাত হ'ব ক'ে হয় পান্তি কর মন।। এখন অধিক দিবা আছে নুপ্মণি। मध्य कहरा योजा श्रेट्य उक्रमी ॥ নিশ্বতে আলিবে হেখা বনজন্ত কতঃ দেখিলে আংজে তথ প্রা: হবে হত।। न छवाना दार्थ का मियाकि इका मरम িছং ভিডা যোৱা দেখি নিশ্চরীগণে ॥ ই মান্তব্য মায়ারপ ধরে হল করে : নারীয়পে ভ্রমে তারা কান্স ভিতরে।। প্রভাহ বাকোর ছলে পোহায় জামিনী। ছরিবে তোমার মন দেখায়ে মেছিনী।। এখন মিনতি রাখ ভূমি ধৈর্য্যধর। থেকোন। থেকোনা হেখা যাও স্থানান্তর।। ওনিরা যোগীরে কন নূপের নন্দন। ললাটে বা আছে মম হইবে ঘটন 🛭

দেখিব বনের শোড়া কেমন নিশীতে ! যার যাবে মম প্রাণ ভয় নাই চিতে ৷৷ ইহার নিকটে স্থান আছে নূপবর। কান্তির নামেতে অতি বিখ্যাত নগর। তমুৰ্ত নামে তথা আছেন নুপতি। কামিনী নামেতে স্থতা অতি ৰূপবতী 🛭 প্রম ক্রপদী দেই তপে ধরা ধন্যা। নাস'ভবে গুণবঙী নুপতির কন্যা।। श्रांडिक्वं कविभाष्ट्र सिर्दे विकास मन्दन । পাণ্ডিত কিলোৱে মন ফুলিবে ঘটনে।। क कांत्र कलावरि दिना साहि इस। নৈষ্য আর্থান হ'ছ দও লুপের ঘনর ।। 'বাংধারতে মন চুংবে মিজ নেশে অ'র। करात्र किराइ अधि अध्य मन, हास ।। হইবে এখান হতে ভ্রীয় হোজন। ছিতীয় দিবলে তথা করিবে গমন। প্রমধ্যে পারে ওত কুন্ত কুন্ত আম। বারেক পারিবে তথা করিতে বিজ্ঞান।। মগরে পে:ছিলে গাবে বেবা ইচ্ছা ভব : তাতুলনা সেই স্থান অধিক কি কৰ।। অতএব কহি ওল ওচে নরেপর। ংশকান। থেকোনা খেলে ক্রনেন ভিতর।। ্ডাবে তাপিত প্রাণ জাবে মন দুংখ। রাজকক্ষ ভাবি কুক্ত রচিল ফৌতুক।।

कू मन कामिनी।

रवाशी कर्ड्क कामिनी क्रम वर्गन। भीर्य-जिममी।

श्वित्रा (बाजीद वानी, क्षरवार्ध मरमण्ड मानि,

কহিছেন গোগীরে রাজন।

কামিনী সে রসবতী, সে কি বপবতী অতি, কহ শুনি ভার বিবরণ।।

रांभी कर नुशसूरु, अन रहा रुर्यपूरु,

সেইতপ বর্ণিবারে নারি।

প্রফুল কুমদ হাসি, হেরে **জার ছঃখরানি.** হার তুলা মাহি হেরি নাবী।।

লেকল লাপিয় ভার, ধে হেরেছে এক বার,

নিরবধি ভাবে নে অন্তরে।

িথে মেদিনী ভারে, হারি মানিয়াছে ভারে,

(२८क (१८क भन ष्ट्रंश करतः ॥

्रतिद्व एवं तुल् भूगी। सृह्याद्य भारत वनि,

श्रीय गटन् वादम मना वास्य।

শুনিলে তাহার ধনী, তুক্ত হবে পিক ধনী,

পিক বৰ শুনিয়া কি কাম।।

দ্বিনিয়া মরাল গতি, চলে দার রববতী,

चकुत्रमा अटर्डत कुत्रमा।

প্রভাতের দিনমণি, জিনি তাহার বরণী,

হেরে ভূলে কুলের ভাজনা।

নিন্দিত মাজা কেশরী, কিবা বেণী আহা মরি,

बहु नम कुक छुई काई :

েরিরা দশন ভার, যুক্তা লাকে আপনার,

मनिटन जूनिम मानिश्त ॥ अतिहा

[5]

কি ছার কুরক জাখি, যে হেরেছে ভার জাখি,
হরিয়াছে ভারে কটাক্ষেতে।
কুচ ফিবা বক্ষপরে, গিরি সম শোভা করে,
অক্ষে অক্স ব্যাক্ষে সচক্ষেতে।।
নবিনে রবিরা ধনী, পাইবে যে গুণমনি,
কত সুখী অন্তরে হইবে।
কহি শুন অতপর; ভেবনা হে ভারান্তর,
পুণ শনী বোড়নী পাইবে।।
অপার সুখেতে ভবি, সুধামুখী সে সুন্দরী,
হইবে হে তানার কাণ্ডারী।
রাজক্ষ ঘোষ ভবে, রেখ হরি জ্রীচরণে,
দীননাথ গোলক বিহারি।।

যোগীর নিকট হইতে কুমদের বিদায়।
কামিনীর কণ শুনি কুমদমোহন।
সূল্য কলেবর বিসাদিত মন।।
সেই ক্রপ রস্কুপ ভাবে নিরস্তর।
ফাল বিহনে সদা বিরস ক্ষম্তর।।
হায় বিধি কেমানতে হেরিব নয়নে।
ভারে না পাইলে প্রাণ তাজিব জীবনে।।
পে জ্যানার আমি তার হইব এসাদ।
ইহাতে যজ্ঞপি বিধি ঘটান প্রমাদ।।
বেই ক্রপ দিবা নিশি হেরি যে অস্তরে।
ধ্যানে জ্ঞানে মম প্রাণ ধৈরজ্ঞ না ধরে।।
কি হল শুনিয়া তার কপের কাহিনী।
ঘাছি বেঁধা মৃগ সম দিবস যামিনী।

कूमम कामिनी।

গেল প্রাণ নাহি ত্রাণ করি কি উপার। ভাষার বিরহে বুঝি ভেবে প্রাণ যায়।। क्ष्माननी क्ष्मामूथी (पर पत्रमन। এখন তোমার লাগি **জায় যে জীবন।।** প্রণনিয়া যোগীবার নত করে শির। দুর্গা বলে শুভ যাত্রা করিলেন ধীর। এডাইরা বনপথ সুখেতে রাজন। বিস্থা তরুর মূলে ভাবিছে তথ্ন।। সৃদ্ধেতে সংখ্যের অতি মনোহর। চারি পাথে পুষ্পত্র গোভিছে বিস্তর।। হেনকালে চারি কন। আসি উপনীত। কুমলে হেরিয়া দৰে ভাবে চমকিত।। এক ধনি বলে একি হেরি রুক্ষতলে। গগণের শৃশি কেন রমেছে ভূতলে।। তভুলনা এইরূপ কপের শাগর। ইংরে রুমণী ধন্য অবনি ভিতর ।। ভার এক ধনী বলে স্থী মরি মরি। বাদে মম মন সদা বাস হাজা করি।। উগরে লইয়া সুখে ভবে করি খেলা। मत्मत्र नाट्य के हात्य द्रित इत्वा।। জায় যাবে কুল মান ভাহে কভি নাই। কদয়ে রাথিয়া সদা জীবন জুড়াই।। আর ধনী বলে সই কবকি অধিক। সামার মতন নারীর কপালেতে ধিক।। জন্ম জন্ম পতি সম তুই পদে গোদ। क्रटलटक कम्बर्भ यिनि नाहि (वाधा वाध !! এমন कुमात्री आमि शांकि मृत्रमान। পতির পতিতে কাল গেল অভিযান !। त्राबादन मा बुदब (मड़े। ममा कुछ कदत । বিফলে জমম গেল ভার হাতে পড়ে॥ এখন ভেবেছি মনে হব বৰচারি। উহারে লইয়া বাব গৃহ বাদ ছাড়ি।। বারেক হেরিক্লা এ যে হরিলেক প্রাণ। क्षिन विदेश कुन नाहि (पथि बांध ॥ আর এক ধনী বলে কি কহিব হার। ক্ষবিরক উহারে হেরিতে গন চার 🖰 কি করি বানেতে গুলুজনেরে ডরাই। ना इटन छेश्द्र लट्य अष्ट्य वनाहै।। ्रक्रय कठिन रू माहि मधा अर्थ। व्यवना मधादम स्कार करें कांत्र कर्या। কহ দেখি বুস্রাঞ্জ তব কিবরণ। কি লাগিয়ে বসে দেখা কোখায় ভবন দ হরে লয়ে মন প্রাণ বলে তক্ত তলে। खातण हरताह अक नाति (याज हरन।। (भवडा शक्सर्य किया रूख निर्णाहत । প্রকশ্ব করিয়া কছ ছমের সাপর।। नाहि यहि श्रविष्य (वर श्रनमनि। ত্যজিব শকলে প্রাণ আমরা এখনি।। मार्कि वान धन्म सत्त अटक त्रनतांक। অবলা বধিতে চিতে নাহি রাশ লাজ।। আমরা কুলের নারি নাহি জানি স্থানা। কাননে বিসিগ্ন তুমি ৰখে। কুলৰালা।।

অতএব কহি শুন ওহে মনচোর।
তকর হইরা তুমি কর এত জোর।।
নাবের উন্তান এই পিরীতি রাজার।
আনন্দ নামেতে কন্যা আছুয়ে তাহার।।
রায় বলে বাস মম লম্পট নগরে।
বেলিক আমার নাম ব্যক্ত ধরাপরে।।
বাফক্ষত কয় বার তুমি হে সুজন।
বাক্যেতে ভুলাতে পারো পুরুষের মন।।

कुगरमञ्ज्ञ कास्त्रिश नगरत छेलानिक छ नइछीत्रशन कर्कुक বারে। মাস বর্ণন। बिशमी। কি দেবিত্ব লাজি চকে, কলদি করিয়ে ককে, शिवाहिन आनिवादत नीत । মিলে দ্ব সংচ্রী, ভার রূপ ছেরে মরি, करत मन इस माहि खित।। কি করি কুলের বালা, নাথ দিলে ভাল মালা, নিবারিব জীবন পতনে। অতুলনা সেই ৰূপ, বিস্থবনে সে অনুপ্ৰ ভারে বিধি গড়েছে নিজ্জন।। আহা নরি কিবা মুধ, হেরে যার মন ছংখ, स्वर्ग कीवन छात्र काटह । হার হার প্রাণ যার, সে জন পড়ে ধুলার, चीत्र मत्न मत्ना इःदर्श कार्ष ॥ ष्टाहाद्वा त्म क्म कारम, द्हतित्व त्य आव कारम, वारि मन वारि नाय याहै।

कि कर कू लड़ माती, लाक लाट्ड माहि शाति। क्षक्रकारम ममक एउन्हें।। करि क्षम मुलवाना, त्य मिन विषम खाना, সে জ্লা নিভার না স্লিলে। त्रं भारत करिका नान, दश्तरह करत मन्त्रान, कामानल महिल पहिला। बामता बनम हु: बि, त्यान काल नाहि सूथि, কালে কাল সহা জ্ঞান করি। देवनाद्य (य कदब आन, एन विटन (क कदब जान মনানলে পুড়ে প্রাণে মরি।। বিষম বিরহানল, हैक्या (शंदक इनाधन, (योरन बालांब क्षांग इछ। তৈজভে তপন কিরণে, বারি এলে ছুনরনে, ষর্মাময় তত্ত্ব ওন্টাগত।। আ্বাড়ে নিরদ ভাকে, সনা প্রাণ চায় তাকে, देशर्गा फक् एडेन छश्रन। আবিংগতে ৰধে ধারা, মম নেত্রে শত ধারা, शिरला नाथ कीवन खोदन ॥ জনাথ করিঙ্গে লাখ, গেছে হানি বজাঘাত, ভাত্তেতে আকুল মম প্রাণ। भगक मारे यूथ, क्रांस वाए मन प्रःथ, मन छाकि ताथ उत्रवान ॥ आधित भूकात श्रम, आभात ना स्त पूम, मकरलंद भाष्टि वारम धरम । कात त्रिवि शर्ख मत्न, हेक्का रह गाँहै दरन,

मन इः एवं काशंत के एक एम।।

कार्खिक जाकृ विविद्या, बिव कांग्री सूर्य शिया, मरहान्द्र महा नमान्द्र। कादर वानि नर्नानती, नमा कदर कलकिनी, भूगंनानी कृष्य करत मरत ॥ **ष्ट्रश्व गार्भित कथा, धाकि महे यथा ७था,** কৰ কিবা আমাৰ ছুণ্ডি। নিশিতে যে করে অঞ্জ, সদত পাই অভিন্স, যন্ত্রণ দিওনা ধার্পতি। (भीत्य भीटकत्र প्रভाবে, মন मना ভাবে ভাবে, নাস্ত বিনে হতেছে প্রাণাস্ত। गाधिक दमस काल, काकित्लद सद्योजान, कुछवरव शंहितम निकास ।। त्म काल पूरशंत काल, किस मम शरक काल, कानकाकित्व कुल भनाता। भलश्रात नभीतान, कोरम छा क कीरम, সুখি আমি নাহি কোন কালে।। काल्खरन मनाखरन, जिल्ला श्रांत मनाखरन, দোলবাতা হয় মাধ্বের। कार्ट २वं गर्व जन, इवं खन्न मन मन. বাড়ে শোক কুরিছে নাথের।। চৈত্ৰেতে মধুর মাস, সুখমর ভুপ্রকাশ,

কিন্ত ছঃখ আমার অপার। রাজক্ষক কর নাথ, দিনবন্ধু দিননাথ, কর দিনে ভর্কেরি পার।।

কুসদনোহনের বিমলা ভাঁতিনীর সহিত সাক্ষাৎ। পয়ার।

সহচরীগণে কন নৃপের কুমার। কিবা নাম এক্ষানের এরাজ্য কাহার।। কিব। নাম নুপতিব ক্ছ বিবরণ। প্রম হান্মিক নুপ কয়বা নন্দন !! প্রত্তীগণে কয় শুন মহাশয়। কান্তিপ্ৰসূত্ৰ নাম সৰ্ক্ত সোকে কয়।। চন্দ্ৰত্ত নামে নুপ জাহিতে কায়স্ক। জাভি বল আদি কত তাহার দারত। সন্তান নাহিক তার একতো নদিদনী। কি কহিব ছার ক্প নামেতে কামিনী !! বসিয়ে ভক্তর তলে কুমদমোহন। বাসার কারন জভি বিরুদ বদন।। चन्छ इत्ला नियांकत अभन नभरत्। বিমলা ভাঁতিমী এলো অতি জত হয়ে।। মনে মনে ভাবে ধনী কি করি উপায়। এ मिनी मा इटव पित्रि विदम्मीत आहा। ন। হবার তাই হবে ক্থা কই ছলে। হাসা কৰিয়াছে কোথা বাবে কোন খলে।। সুধালে পাইব টের বলে যেবা আমে। भीदि धीदि कार्ड शिद्य विभवा विकारम। কহ শুনি ভাগাধর <u>র</u>সে কি কারণ। किया नाम कात पूर्व काशात खबन।। শুনিয়ে কছেন রায় শুন পরিচয় ৷ क्मनत्याद्य नाम छतात्वे जालत्।।

क्रमम कामिनी।

ৰি ভীয় দিবস হলো এসেছি এখানে 1 वागात कातन अभिनाय कछ श्राम ॥ কোথাও না পাই বাদা কি করি উপায়। ভারিণী যদি কুপা করে রাখেন পার।। তবেত পাইব বাসা পূর্ণ হকে আশা। मक्रा अदमरण यांव रहेश देववाला ॥ বিমলা কহিছে শুন নৃপের কুমার। भाषा करत यां अ यमि जानस्य जामात ॥ পাইবে উত্তম স্থান যেবা ইচ্ছা কর। ज अधिनी क्व मानी विन खनाक्त ॥ न है। सम भूख दना धाकि धकाकिसी। ষ্ঠি ভাগ্যহীন আমি কি কব কাহিনী।। বাটা মোর ভালে। বটে অভি পরিপাটি। নত্ম, খেতে সরোবর পাঙ্গে কালী বাটা॥ नक्षु महिल यथा नित्त विदाक्षिण। नृशंब्द शूर्स कीर्डि चाट्य सकानित।। কং বিমলার ৰূপ না দেখি স্বৰূপ ! বিদেশী ভুলারে যায় তৈলোকো অনুপ।। জানে কভঙল্ল মন্ত্ৰ ছিটে ফোট। আদি। মুখেতে সুধার ধার কুন্দলের ফাদি।। কথার কে পারে ভারে যদি ধরে ছল। পড्नी পनारम गांत छत्य कतः श्ला। দাঁতে মিশি মুখে হাসি পাকি মালা গলে। পরনে রক্ষের সাভি কথা কর ছলে।। বুঝিরে চতুর রাম ভাবে মনে মনে। কি বাক্য বলিয়ে আমি ডাকি সংখ্যেন।। তুমি ভারি আমি নাতি জেনো গো তোমার। এথানে আমার দেখ কেহ নাহি আর ।। বিপদে পড়িলে ডুমি করিবে উদ্ধার। পত হতে তুমি আয়ি হইলে আমার।। বিমলা বলিছে নাতি চলহে আলয়ে। मितः अवभाग हत्ना मन्ता। यात्र वरतः ।। রাধ বলে শুন আমি জিজ্ঞাসি ভোমারে। দাস দাসী সঙ্কে নাহি কে জাবে বালারে !! ভান মোর ভাগমণি গুণের সাগর ৷ তাহার কাবণে ভূমি হওনা কাতর।। আমি তব দাসী ওহে কি লাজ কিন্ধরে। যথন যে আজ্ঞা ভূমি করে। রুপা করে। সেই দণ্ডে সেইভ কর্মা করিব ঘনে। বহু ভাগ্যে পাইয়াছি অমলা রতনে।। ভূমি ওহে নুপসুত আমি অনাধিনী। पुना ना कड़िख स्मादत ভावित्य छःथिमी ।। র দ্বন করিয়া পরে করেন ভোজন। ভোজনাত্ত তাত্ত যোগায় ততক্ষণ।। পারেতে করেন রায় আয়িলো আমার। ভূমি কি আন কিছু রাজার সমাচার।। রাজার বাটাতে নিভা যাই বৈকালেতে। अमार्वि याहे जान वादम मकत्न छ। नविरमय कर खनि नुरभव काहिनौ। নুপের সম্ভান কর কয়বা নিদ্দিনী।। রাজার বয়ক্তম কত কয়বা রাণী। প্রকাশিয়া কহ আয়ি সবিশেষ বাণী।।

कुमर कामिनी।

विभवः कहिट्ह छन कहि विवत्।। এক মাত্র পাট রাণী নাহিক নন্দন।। কামিনী নামেতে আছে নুপের কুমারী। কি কহিব ভার ৰূপ বর্ণিতে না পারি।। কনা। যোগা পাত্ৰ নাহি পান নুপৰব। কন্যার বিবাহ লাগি ভাবে নিরস্তর।। নুগের কুমারী মোরে বলে মাসী মাসী। নানা দ্রব্য দেয় মোরে ভাবিয়া হিভাশী।। রায় বলে বিনি মোরে ভাল মিলাইল। এত দিনে ত'্রা বুঝি তুঃধ যুতাইল।। এ নাতী হইতে পাব সকল সন্ধান। কেমনে কহিব ভার করি অসমান। কহিলে প্ৰকাশ পাছে করে এই ভয়। গুণ্ড কথা ব্যক্ত করা উপযক্ত নয় । ছল করে মন বুঝি যা হবে পশ্চাতে। হায় বিধি ভূমি বাদি হওন। ইহাতে।। তমি ধদি হও বাদি কে করিবে আগ। শতেতে কলন্ধ হবে যাবে মম প্রাণ।।

বিমলার নিকটে কুনদের কামিনীর পরিচয় জিজাস।।
ভাবিয়ে চিন্তিরে রায় কংগন তথন।
সুধাইরে দেখি দেখি কহিলে বচন।।
ভাবেতে বুঝিব পরে ঘেবা খুক্তি হয়।
ভথন করিব রাজ্য মাফিক সময়।।
ছলনা করিয়া যদি মজাইতে চায়।
চলিয়া ঘাইব আনি মজারে উগায়।

कुमम कामिनी।

আছে। আরি বল বুমি জিজানি ভোগারে
নৃপের কুমারী নাজি পণ্ডিত বিচারে।।
তারি লাগি ভারে। নাকি বিবা নাহি হর।
তানছি লোকের মুখে সামান্য তো নয়।।
গুনে বনী কয় নাতি তলিহে ভোমারে।
চার ফেলি চারে মলি পার আনিবারে।।
নারুরা গোপনে ইহা নারিব করিতে।
ভোক হয়ে বাদ করা জুজক সহিতে।
রাজকুড়ে কয় রায় কি ভয় ভোমার।
ভাতিনী হইডে হবে কার্যের উদ্ধার।।

কুমদের বিমলার সহিত কথোপ কথন
ও আক্রেপ।

হাবু-ব্রিপদী।
কুমদমোহন, তাবেন তথন,
ভারে হেরিব কেমনে।
প্রাণ ভার ভরে, ধৈরজ না ধরে,
হেরি সমনে দপনে।
দিবা নিশি মন, হর উচাটন,
তেবে ভেবে প্রাণ যায়।
কি করি বলনা, সহেনা যাতনা,
কেমনে পাইব ভার।।
মণি হারা কণী, না হেরে সে ধনী,
ভামি আছি সেই মত।
কোথায় কামিনী, নৃপের নিদ্দনী,
মন চাহে ক্ষবিরত।

श्रुद्ध माम छात्र, वाँहिटम এवांत्र, (करम अम जुत जुत्। अक्षान विषद्य, कार्य छात्र छद्य, आंग इत्ला (मशंखत ॥ ্ট খপ কত, ভেবে অবিরত, গবে করে সমর্ণ। লাবিলে ফি হবে, সনুরেতে হবে, तांश बीमधुख्यमा। टाद्व यमि शाहे. बीदन जुड़ाई, ছবি কর না নৈরাশা। ८५८व पिन पिन, "उन्न इल कौरा, ক্রমে বাড়িছে পিপাস।।। বিমলাবে কন. তথ্য রাজন, **्रक्ट क्रिय वस्त्र।** धाळा (भए हाया, कष्का कहि-धाया, खार बाकार्त क्या ॥ युष्टा फिल होइ, डाइ लास होइ, পথে कर्य मरन मरन। স্থানি এক গুণ, কব চারি গুণ, টের পাইবে কেমনে।। খদি টের পায়, ভুলায়ে কথায়, मिव यामि इत्ल करल। হাত লাড়া দিয়ে, এল দ্রবা লয়ে, ড়াকে নাতি নাতি বলে।। नृत्भित्र नन्मन, कत्रा त्यान, আনিয়াছি জাজামত।

বেবা ইচ্ছা কর, তাই আজা কর,
বোগাইব সেইমত।।
বাজরুক কর, নৃপের ভনন্ন,
মন স্থির কর ধীর।
পাইবে কামিনী, নৃপো নন্দিনী,
ঘাকি বাসে তাঁতিনীর।।

ঞামিনীর নিরুটে বিমলার গমন ও কুমদের পরিচয় মান পুজা করি সাঞ্জ ক্ষমণোহন। পথশ্ৰান্তে নিদ্ৰা জান হয়ে অচেতন।। বিমল। ভোজন করে ভাবে মনে মনে। ইহারে ঘটাতে পারি কামিনীর সনে।। ত। হলে অধিক ধন পাব গোপনেতে। গোপনে করিব কার মজিবে গুয়েতে !! আগার কি ফতি বল আগে পাব সুধ। পশ্চাতে যাহৰে তার দেখিব কৌতুক া শুনিলে তো সভা আছে জানি পরাৎপর। এখন তো করি কর্ম ঘাহবে তাপর।। शाहे दाथि बाथ वाँगे कामिनीत काटह। যখন যাহনে তাতো লল্লাটে যা আছে।। जावित्य विश्वित्य धनी गाय भीता भीता । रत्न कि हत्न এ क्या क्व काशिमीता।। একেতো নুপের সুতা তাহে বলে মাদী। কহিতে উচিত কিন্তু মনে লাজ বাসি।। প্রবেশিল নৃপ পুরি কত কথা বলে। উপনীত হল রামা **অব্দর মহলে**।।

বনঝি বনঝি বলে ডাকে বারে বারে i অনাথিনী বলে কি মা ভুলেছ আমারে।। কামিনী কহিছে মাদী এস এস বস। ভাল বাসা কিন্তু মাত্র বচনেতে ভোষ।। এতদিন কোথা মাসী ছিলে কুতুহলে। পথ ভূলে আজি दुखि এসেছ গো চলে।। শুনে রামা বলে বাছা কৈতে বাসি লাজ। ভোলারে হরিতে গো এদেছে বুবরান্দ।। বাসা করিয়াছে সেই আলরে আমার। স্থাট নগরে বাদ রাজার কমার।! প্রম প্রিভ রূপে ভূবমলেহন। আরি আরি বলে নাম কুম্বমোহন।। নিভা নিভা বলে মোবে দেখাতে ভোমায়। প্রবঞ্জনা করে রাখি কথায় কথায়।। আমার কি সাধা বল করিতে একার। আমি ভাবি প্রমাদ ভ্রিলে মহারাজ।। গোপনেতে না'হ বতে এসর ঘটনা। পরেতে প্রকাশ হবে হইবে ঘোষণা।। তুমি যদি বল বাছা পারিবে রাথিতে। ভবে অংমি পারি কিন্তু এ কর্মা করিছে।। নতুবা একাযে আমি কিছুই না জানি। তব বাক্য কিন্তু আমি বেদ তুল্য মানি॥ কামিনী কহিছে মাসী নাহি কর ভয়। করিবে গোপনে যাহে চির্দিন রয় :। তুমি আমি তিনি ভিন্ন অন্যে না জানিবে। যভনে নিশিতে ভারে গোপনে আনিবে॥

ভোমার বাটার কাছে আছে কালী বাজি।
ভথায় আনিবে তাঁরে সাজাইরে নারী।।
পিভার আদেশে লয়ে যাবে সেই স্থানে।
ভাহারে হেরিব আমি তারা সমিধানে।
ভানিরে ভাহার রূপ দহিছে অন্তর।
ভারিয়ে যুজার প্রাণ সেই গুণাকর।।
ধর্ম জানে তুমি জান চন্দ্র দিনমণি।
ধর্ম কানে তুমি জান চন্দ্র দিনমণি।
বিমলা বিদায় হয়ে চলিল আলয়।
জজনে ভাবে কথন হবে চন্দ্রোদর।।
রাজরুক্ত ভাবি রুক্ত পাদে করি আশা।
রচিল প্রার ছক্তে শুনলিত ভাবা।।

বামনীর কোটালগণের প্রতি আদেশ।
বিমলার প্রতি তবে কহিছে স্থানরী।
ভাষার মহলে ভাছে হতেক প্রহরি।
ভাষিয়ে আনগো সবে আমার স্থান।
ভাষার নারীর বেশে আনিবে গোপনে।
ভূমি আমি ভিন্ন ইহা অন্য নাহি জানে।
ভূমিষ্ট হইয়া সবে নত করে শীর।
ভবধান ঠাকুরাণী হজুরে হাজির।।
বিমলাকহিছে সবে কোটাল এসেছে।
কিবা আজ্ঞা কর বাছা বাহিরে রমেছে।।
করিবে কোটালগণে আমার বচন।
করেছে সুর্যোর ব্রত হবে উজ্জাপন।।

প্রতাহ যামিনীযোগে যাব কাননেতে। কভু না করিবে ব্যক্ত পিভার স্থানেতে।। আর এক আছে মনে করিব সাধনা। নাথ লাগি পুজিব গো করালবদনা।। দেখিব আমার ভাগ্যে করে কি না দয়া। ত্রিলোক তারিনী ভারা শৈলেক্ত তন্মা। ঘতেক কোটালগণ রক্ষা করে পুরী। বিপালে ফেলনা মোরে করিয়া চাতুরী।। ্রমান ঘটিবে জেন শুনিলে রাজন। হত এব কৃছি সাবধান সর্বজন।। পিতার কোপেতে নেখে। জায় না জীবন। र्श्वनशा अहती भव कहिए उथन ॥ करि धांभगात कार्या आंग यमि राम। হুখাপি নারিব ব্যক্ত করিতে রাজায়।। আমরা ধতেক আছি তব খানেকাদ। কি ত্বর্থ সবার হবে ঘটিলে প্রমান।। वाजक्ष पार्व इति करूना मानव। भीन शैरन कृषा कत ७१२ छगांकत ॥

কুমদের রমনীর কপ ধারণ ও কামিনীর সহিত মিলন। ভোটক হন্দ। কুমদমোহনে সাজারে যতনে। রমনীর বেশ দিল ততক্ষণে। বক্ষেতে কাচলী জাটিয়ে তথনি।

मिन गांकारम तमशे छारत धनी ।।

বুবরাজ চলে রাজহংস জিনি। রুস সাগর নাগর ৰূপ জিনি।। বসন পিতামরী শোভিছে অঙ্গে ৷ আদিছে মাতিয়ে মানস তরকে।। চলে ধির ধিরে ভাবিয়ে কামিনী। शाखित्र कामिनी (श्विट्य यामिनी ॥ ত্রিনয়ণী ত্রিদেব যদিনী ভারা। यथा विवाकिक मीरन छःथ रहा।। त्मड श्वारन छेशनी**७ रेथर्ग। ५**त । অন্তরে মানলে ভাবে নিরস্তর।। ভূমি যদি দয়া কর মা অভয়া। পূর্ণ কর আশা পাযাণ ভনয়।।। उथादन कामिनी धनी जादन मदन। (क्यान (हवित.क्यामरमाहत्त्।) হেনকালে তথা চলিল বিমলা। कृयदम ब्राथिश कटत नाना हना।। উপনীত নুপ বাবে গিয়ে ধনী। বলে চল হেরিবে সে গুণমণি॥ ভোমার জাসয়ে আছে পথ চেয়ে! তাই আইলাম আমি পথ ধেয়ে।। गम् कत्र नाथ एइतिटङ रन होन। চল চল পূৰ্ণ হৰে মন সাধ।। সাক্ষায়ে রমণী ভাহারে যভনে। রাখিয়ে এসেছি কালির ভবনে।। वामिनी कहिट्ह मात्री हल हल। কেমনে হেরিব উপায় কি বল।।

काशद्वा विद्रास्य अधान मा द्रार । প্রাণ অহরহ অদর্শনে দহে।। या चारह लल्ला है इहैरव शम्हारह। চল যাই তথায় তোমার সাতে !! চলে ধনী রক্তে মাভিয়ে ভরজে। কু মদে হেবিতে বিমলার সঙ্গে।। छेशनीड यथा कुममरमाध्य। शियांनी निकटि इहेल भिल्म।। গেরিয়ে মাতিল ধনী করে ধরি। ছলে ভুক্তনে ভুক্তনে ব্যঞ্জ করি।। হাণিছে হাণিছে বচনে ভূষিছে। নয়নে নয়নে জন্মনে দেখিছে ! नुश नकाम काशिमी करत धरि । एहिएइ मिन्डि रक्टविथ कति॥ ভূমি নাগর সাগর পণ্ডিত ছে। (डिक्स) में कुलमा वाक करता ग Cर II विकारेन्त्र भाग cacया अनामीca। राभा करत कत भरत व्यवीनीरत।। আমি ভোমারে কহি নূপ নক্ষন। চল চল নাথ মম নিকেতন।। करर कूगए कुमांत्र कामिनीद्त । विछा नाहि इत्ला बाग्र भांज कित्र॥ তব ভনরারে যাও বাসে লিখে। कामिनी क्रमनि शिल शिल दिस ।। আমি ভাপন কুমারে দিব বিয়ে। চলিলাম बहेरक ভেটিব গিয়ে॥

अहेबार प कृष्टे बारन निका नव तरम। कानत्क करवन श्वा मरक त्थम तरम । করিয়া নারির বেশ কুমদমোহন। কামিনীর মন প্রাণ করিল হরণ॥ য়ত ছিল খন ছুঃখ গেল ছুজনার। কব কি সে সহ কথা কহিতে জপার।। নুপের কুমারী ছিল চির বিরহিনী। নাগরে লইয়ে ওফে পোহার যাদিনী !> বোন বাধা নাহি ভার কে পাবে সন্ধান! নার্ত্তি নার্ত্তি প্রেম কে জানে সন্ধান । কামিনী কুমার রায়ে কহিছে তথ্য। এখন উচিত নাথ প্রতিজ্ঞা পালন।। ७। इत्य ५३ त्व वार्क महि वानि एव। বিচারে জিনিলে ব্যক্ত হবে প্রাণেশর।। আজি নাথ দিবাভাগে দেখেছি অপনে। ব্যিয়া আমার পাশে পুরুষ রতনে।। জননী আধিয়' মোরে করিছে ভর্পন।। ভটস্থ হইথা উঠি হয়ে বিবসনা।। মাণতী কহিছে আদি ঘটেছে জঞাল। कुगरम काष्ट्रिट आका मिन मशैभान॥ তাহা শুনে ভয় পেয়ে করেছে প্রস্থান। এখন বাচাও প্রাণ কর স্বন্ধান। অকুল সাগরে পড়ে আকুল অন্তরে। কালী কালী বলে আমি ডাকি উচ্চৈঃস্বরে ।

कूमम कामिनी।

গুনিরা আমার ধনী যত পুরবাদি।
উপনীত হল সবে মম বাসে আসি।।
কেহ বলে কেন ধনী করেছ রোদন।
কেহ বলে কেন হেরি বিরস বদন।।
নিদ্রা জঙ্গ হলে দেখি কেহ নাহি কাছে।
কেবল বিশ্বা মাত্র সয়নেতে আছে।।
সেই কথা মনে হলে ভাবি হে অন্তরে।
অন্তরের ধন ভুমি যেওনা আন্তরে।।
নব নাগরে সাগরে কামিনী অমনি।
মান্তন মাভিয়ে দশনে দংশিছে ধনী।।
সুগ চুমন কুচ মানিন আলিজন।
হেরে রাজরুঞ করে ভবানী শরণ।।

্রুমদ কামিনীর রহান্ত।

তক নিশি কুতুহলে, কুমদে কামিনী বলে,
প্রাণনাথ কহ সত্য বাণী।
আছে বড় মন সাধ, পুরাও মনের সাধ,
তোমা বই জানা নাহি জামি।।
ভূমিহে পর্য ধন, মম জীবন যোসন,
তোমা বই কে আছে জগতে।
সদত বাসনা মনে, হেরি নরনে নরনে,
অদর্শনে থাকি চাহি পথে।।
যাবত ধরাতে রব, ভব দাসী হরে রব,
না মরিলে ভুলিতে নারিব।
শুন ওহে প্রাণেশ্বর, ভেবনা হে দেহান্তর,
তাজিলে হে মরমে মরিব।।

তাকোনা ভুলনা বধু, সিমুলে খেওনা মধু, মন প্রাণ সঁপেছি তোমায়। • यमि गांउ कांन चल, यश्रह जामात्र तल, অন্তরেতে হেরিয়ে তোমায়।। खिनित्त (इ त्रहेकर्ष, यांत आप्रि उत मत्न, लुकारेश जननी ताकरम। পুরুব পরেশ মণি, রমণীর শিরোমণি, (दर्य माथ (दर्श (इ हदर्ग।। कुमम कहिरह धनी, जुमि गणि जामि करी, ভুলিতে নারিব হে তোখার। मा इत्ल (पर श्राचन, प्यामा में शिंद गम. यार्गात अझ काल गांग।! कि कर्त (इरत्हिधनी, शत्र कि क्षत्र गिन, না হেরিলে ভাসি নেত্র নীরে। হেরিলে হরিষ মন, বাসি হেরি সর্বল্য । কহি ধনী করে ভব কিরে।। ट्यांमादत (य जावि अदन, तम कि कादन जाना कदन, তেজনা আমারে বিশুমুখী। जुमि सम धन आ।, जुमि सम धान छ्लान, হেরিলে কাতর হুই ছু:খি। कहि खन विनिमनी, अज्ञां इटला शामिनी, त्मर आबि जामाद्र विनात। হলে অন্ত দীনমণি, আবিত পুন: তথনি, রাজক্ষণ কহিছে ভাবার 🕆

कुमन कामिनी।

का निनीत क्यापत गरिक त्रशंखा। কুমদের করে ধরি লুপের কুমারী। কহিছেন প্রাণনাথ লিদার দিতে নারি।। পলকে প্রলয় জান তব অদর্শনে। আর এক কথা বলি থাকিবে গোপনে॥ একথা না বাক্ত ভূমি করো কোন স্থানে। দিবা ভাগে তুমি নিত্য থেকো সাবধানে।। প্রকাশ হইলে কিন্তু যাইবে জীবন। ছাত এব কহি সাবধান সর্বক্ষণ।। গুনিরা কুমন কর গুন প্রাণেশ্রী। कम् न। रुवेदा राज्य स्वनत्वा सूच्यतो ॥ তাহা আমি ভালো জানি বিশেষ মতেতে। मा १८व मा १८व वास्य बामिएव ११८५८७॥ किस वाभि महम जन्न आहेत कांतरन। পাছে মাগি ব্যক্ত করে কাহার ভবনে।! নষ্ট লোকের নষ্ট রীত শান্তের কথা। भूतान अनटकटक स्थ रथांत्र ख्या ॥ এতবলি চলিলেন কুমনমোহন। বাদায় আদিয়া হলো উদয় তপন।। প্রাতঃকৃত্য আদি দারি মান পুদা করি। রদ্ধন করিতে জান নববন্ত্র পরি॥ পরেতে ভোজন করে স্থবে যুবরায় ৷ আসিয়া বিমলা ধনী ভাদুল যোগায়।। भौड धांत्र कतिया भरता कटतम मयन । विमना जाशन कार्सी कतिन शमन ॥

পরে নিজা হতে উঠি নৃপের তনর !
ভাবেন কথন হবে শশির উদয়।।
কেমনে হেরিব আমি ক্লে বিধুবদনী।
কভক্ষণে হবে জন্ত আজি দিনমনি।।
দেই এথ হেরি আমি সয়নে সপনে।
সাচত বসনা হেরি নয়নে নয়নে।।
এইরণে ভেবে কত কুমদমোহন।
নগর ভ্রমণে স্থাব করেন গমন।।
গ্রাজরুষ্ণ কহে প্রত রচিন্না প্রার।
কুমদমোহন রাথ কি ভর তোমার।

দ্মদ কামিনীর বিহার আরত।
ভৌতক হল।
আজি জানিব নাগর সংগর হে।
নহিশান্তে কেমন পণ্ডিত হে।।
দেখিব আমার কেমন সৈনা হে।
পারে কি না পারে রণে জিনিতে হে।।
রস সাগর নাগর করে ধরে।
কহিছে জানিব আজিলো সমরে।।
হারিলে হারিব যতেক ভূষণ।
করি রণে পর্ণ নৃপের নন্দন।
আরন্ডিল ভূই জনে কামরণ।।
হানিল মদন কুমদমোহনে।
পঞ্ষার ভার কদ্বে যতনে।।

কামিনী অমনি বাধে ভুল পাশে। कुमन धनीरत रकरन काम कारम ।। मूत्र हसन करत यज्ञान धनी। ঘন ঘন নিতায় আঘাত ধনী।। অপেনি কামিনী হারিল সমরে। কুমদমোহন ভবে ব্যক্ত করে।। শুন লো সুন্দরী দেহ লো কন্ধণ। बक्ता गांश श्रीकः कतिएक त्रणा। ए भ्य डेण्डिक कहाला अर्थन। দেখলো চাহিয়া নাহিক রঞ্জনী।। कथाम कथाम नाना उक तरम। क्ष्र छेट्ठे द्रमहाम क्ष्रु दरम ॥ शिंगिट्ड व्यलिट्ड नागरी नागटत्। শশবর গেল অন্ত গিরিপরে॥ कारन ना घड़ेना कि घड़ित्व शरत। ছজনে মাজিয়া প্রেম রস ভরে॥ উদিত ভাক্ষর প্রভাত জামিনী। প্রমাদ মনেতে গণিছে কামিনী।। কেমনে রাখিব ভোমারে যভনে। माथ दर यदि दर इकान कीवरम।। ভূমি পণ্ডিত হে বল নাকি করি। করহে উপায় এবে কিসে ভরি॥ অমি প্রাণেমরি তাহে কতি নাই। তোমার কারণে সদত ভরাই।। व्यागित कननी मिथित व्यमनि। স্বামি নাথ প্রাণ ভাষিব তথনি।।

সৃহিতে নারিব গালি দিবে মোরে।
পোমি থাকিব বঁধু মরমে মোরে।।
ধিক্রে জামিনী প্রভাত হইলে।
স্থব দিয়া পরে শক্ষটে কেলিলে।।
জারে হেরে ছিলাম স্থথ-সাগরে।
সে জনে এখন লয়ে যাবে ঘরে।।
কেমনে দেখিব স্থাহার এগতি।
ভূমি আমার বঁবু হে গতি মতি।।
মজিলে পিরীতে নাহি থাকে জান।
ভাবিয়া কি কাথ নিশি অবশান।।
কহে প্রত রাজক্ষণ ভোটক হে।
উপায় কি কর রসসাগর হে।।

কানিনীর আক্ষেপ।
প্রভাতে উঠিয়া ধনী গনিছে প্রমাদ।
হায় বিধি একি হেরি হরিবে বিসাদ।
কেমনে জননী পাশে সহিব গঞ্জনা।
কিন্তরীরে রুপা কর করালবদনা।।
প্রমোদার প্রাণ বায় করি কি উপায়।
কাতরে বিপদে মোরে তুমি রাখ পায়।
বছাক্ষে গুণনিধি নিয়াছিলে মোরে।
৬ংহি ভারা ছংব হরা পুনং নিলে হরে।।
এখন আমার ভাগো ঘটেছে জঞ্জাল।
হর ছংখ পঞ্চ মুখ তুমি মহাকাল।।
পিতার কোপেতে আজি যায় হে জীবন।
কোখা হে পাশুব নাধ শ্রীমধুস্থদন।।

कुमन कामिनी।

লাজে মরি সাদা ভরি কি হবে ছর্গতি। लक्का ताथ मीननाथ अधिशात शांक।। नित्व शांनि मूर्त्थ कानि यङ পুরবাসি। एक ना विभारत इति नाम हुन्थ **जा**नि ॥ পড়েছি অকুলে এবে ভেবে প্রাণ যায়। দীনবস্থ রূপাময় বাঁচাও আমায়।। ना तरता करति कि काय अर्थन कि इरव ! পুণ একা সমাত্র সামুক্ল হতে।। ক্য নাথ প্রাণনাথ রুমের সংগ্র। ्क भटन याहेटव नाथ वल सानास्त्र ॥ ছারেছে প্রহরি গণ আছে কত জনা। फिनटन मातिरद एएड **मासिया अञ**्गा।। মহীপাল তুল্য কাল শুন হে রাজন। তানখের খেন্দু নাথ পাত্র মিক্স গণ । হার বিধি ভূমি বাদি কেলিলে বিপদে। হারালে ভোমারে নাথ কি কাম সম্প্রে :: क्षि गम धन आंग कुत्रि हि गकिता; তাল মন্দ ভোমাবই আর কারে বলি। দেখিলে ভোমার ছঃখ ত্যাজিব জীবন। তোলার মরণে নাথ আমার মরণ।। তোসার সুথেতে আমি ছিন্ন বড় সুখী। ভোমার লাগিয়া ভেবে হয়েছি অসুখী!! হেরিতে ভোমার হাঁসি সদা ভাল বাসি। প্রাণের সহিত ৰাখ গছা ভাল বাসি॥ শিয়রে শবন ভূলা হেরি যে ঘটনা। কেমনে হইব পার উপায় বলনা।

জনক নামেতে দাসী হল উপনীত।
কুমদে হৈরিয়া ধনী ভাবে চমকিত।।
মনে মনে ভাবে ধনী এ আর কেমন।
পক্ষ প্রবেশিতে নারে হাহার ভবন।।
কেমনে আইল হেথা করে কি উপায়।
একথা কহিগে গিয়া রাণিরে রাজায়।।
গাশ্চাতে হাইবে প্রাণ শুনিলে ভূপাল।
এবে হাই চলে আগে কহিতে এহাল।
ভাবিয়া শ্রীকৃষ্ণ পদ রাজকৃষ্ণ ভনে।
ভাবয়া শ্রীকৃষ্ণ পদ রাজকৃষ্ণ ভনে।

ভনক মুঞ্জরির রানীর নিকটে গনন।
ভনক মুঞ্জরী ধনী ঢালল তথনি।
উপানীত হলো থথা নৃপের রমনী।
কর্যোড়ে কয় গিরা নবিশেষ বানী।
নিবেদন ভারধান কর মাগো রাণী।।
কহিবারে বাদি লাজ না কহিলে নয়।
কোন তুমি নহি আমি দিও পদাভ্রম।।
ঘটেছে প্রমাদ বড় তব তনয়ার:
ভূজনে মরিল আজি কোপেতে রাজার।।
ভূবনমোহন এক নবীন নাগর।
রহেছে মহিষী তার গুহের ভিতর।।
তাহারে লইন্নে রক্ষে আছেন স্কুন্দরী।
কহিবারে আইলান খীয় মনে ডরি।।
সত্য কিবা মিথা। ইহা চল গো দেখিবে।
মিথা। যদি হয় তবে প্রতিকল দিবে।।

कुममकामिनी।

আমি গোভোমার দাসী হিত অভিলাষী। প্ৰমাদ ঘটনা দেখি কহিলাম আগি।। कि कर्त (क्यान अला अन्तत महत्न। ভাবিরা না পাই টের ভাবি নেত্র জলে।। মলিকে মালতী যে গো আছে ছুই দাসী। অনংগ্র হেডু ভারা ছই পুণ্য নাশি।। लक लक सदम यात तका करत शूती। ত:হ'র অন্দরে চুরি করিয়া চাডুরী।। কেমন প্রহরিগণ কেমন কোটাল। মরিবে পরাণে সবে শুমিলে ভূপাল।। শুনিয়া দাসীর বাণী মহিদী তথন। পোপনে আড়ালে থাকি করে নিরক্ষণ।। হেরিয়ে ফোপেতে ধলি ভাবিয়ে অন্তরে। পাঠান দাসীরে ভাকিবারে নুপবরে॥ অনক্রমুঞ্জরী গিয়া নত করে শির। (मर्थिया वनीद्र हाहि किकादगन धीत ॥ जनक मुख्यती कंड किरमत कांत्रम। কি লাগিয়া দাড়াইরা আমার সদনে।। অবধান ক্ষিতিনাথ অধিনীর বাণী। নোরে পাঠালেন তব আছে মহারাণী।। বারেক অন্দরে যাত্রা করুণ রাজন। মোরে পাঠালেন হেথা ভাহারি কারণ !! विलिन नत्रत्र अस्तत्र महरम। উপনীত সহিবীর পাশে কুজুহলে॥ রাজকুক ভাবি কুক রচিল পরার। ভরদা কেবল হরি চরণ ভোমার।।

क्रमम कामिनी।

পরার ।

মোহিধীর রাজার প্রতি ভৎ সনা। केउटर काछे लगन निकटि शंबित। আংদশে কোটালগণে আনায় নাজিয়॥ ান ওহে রাজ্যেশর কব কি কৌতুক। যাও নাথ দেখ গিয়া জামভার মুখ।। नाहि पिटन कामिनीत विचा दह तांखन। कलारक श्रुद्धिल व्राका कि कब वर्धन।। ক্ত নপসূত এলে। বিভা করিবারে। কেন নাহি দিলে বিভা কি কাম বিচারে। এখন হইল ভাল বদৰ উচ্ছল। ভোমার বি দোব মম মরণ মঞ্ল। काहरक ऋबा वांट्य विचा माहि पिटल। काभिनीत शास्त्रभाथ हारत ना स्मिरिटन । বেমন করিলে কর্ম প্রতিফল তার। शर्त धर्त इटला नाथ दगण खरुकात ॥ कार्यन (कमन करव (मर्थाद वनन। 😇 भीत इन (२४ नुभ रह अर्थन।। निष्ठनश्च कृत्न कानि मित्न (१ कुभारी। কেমন প্রহরিগণ বর্ণিবারে নারি।। लक लक सदम यात तक।कदर भूती। কি কব অধিক ভার অন্দরেতে চুরি।। কেমন কোটাল তব গ্রহরি সকল। পেট মোটা খুলে খার তক্রের দল।। শুনিয়া রাণীর বাণী জোধেতে রাজন। क्रम अक्रम ज्ला हता स्ताहम ॥

क्षम कामिनी।

নাজিরে ডাকিরে রাক ক্ল সবিশেষ।
কর হে কোটালগণে নিকটে হাজির।
আদেশে কোটালগণে আনমে নাজির।
আদেশে কোটালগণে আনমে নাজির।
মহীপাল যেন কাল কোখেতে কাঁপিছে।
পাছকার চোটে কার প্রাণ বা ফাটিছে।।
লাথি চর কিল কার বক্লেডে পাঘাণ।
ফার থেমে কেহ বলে যার যার প্রাণ।।
আমার অন্দরে চুরি নিমক হালাল।
চোর ধরে এনে সবে খুচাও অঞ্জাল।।
কামিনীর বাবে চোর আছে লুকাইয়।
তুরিত আনরে চোরে করে রক্জু দিয়া।।
হে গাই রাজক্বান্ধ রচিয়ে প্রার।
ভরনা কেবল হরি চরণ ভোমার।।

কামিনীর প্রতি মহিধীর ভৎ সনা।
ভলো কুল কলছিনী, কেন হয়ে নিসন্ধিনী,
গোপনেতে করিলি এ কায়।
করি গরল ভক্ষণ, ছিল মঞ্চল মরণ,
মহারাজে শেবে দিলি লাজ।
ভলো কালা মুখী, হলি চির দিন ছংখী,
ধিক ধিক ভোরে পুর্ণ নাশি।
হয়ে আমার ছহিভা, হলি চোরের বনিতা,
ভোরে শিখাইবে নুপ আশি।
এই আমার পুরিভে, নারে পক্ষ প্রবেশিতে,
ভারে আনিলি কেমন করে।

क्रिन (मार्त ना कहिलि, भारत जार्शन मिलित, এখন সে জন প্রাণে মরে।। ্তোমার কি হবে গভি, কিবা করে নরপভি, ভার ক্রোধে হারাবে জীবন। ছিল বড় মনে সাধ, বিভাদিব করে সাধ, (म माध इहेल खकांत्र।।। চুই দাসীরে কহিছে, রাণী ক্রোখেতে অলিছে, ভোরা ভোরে রংক্সের রঞ্জিণী। वल हेरांत्र कारिनी, अत्त क्याम कारिनी, আনিত লো প্রত্যুহ যামিনী । करह मानी कृष्टे खरन. अणि दिनव दहरन. এর কহি खन विवत्। মবে ঐ গুণাকর, আশিল তব নগর, (मात्रा चार्ल स्मिन्न कथन।। कर स्नाम मागदत, (मरथहिल के मागदत, বশে থাকিতে গো ভক্ততলে! ₩ই মাত্র মোরা জানি, বিচার কর মা রাণী, वारम हर्ल याहे निमि हरल।। कांश हेशांत काश्मि, जारम विभवा जाँकिमी, নিত্য আসিত যামিনী কালে। মোরা ডড়ি গো কহিতে, সাসা উহার বাটাতে, ন্তনি রাণী কংখন ভূপালে।। শুন হে পুণ্যের সেতু, বিমলা ইহার হেতু, তাহারে আনিলে হেথা তুপ। পাইবে সব সন্ধান, জানিবে কার সন্ধান, সে জানে লাখ বিশেষ ৰূপ।।

कूमन कामिनी।

কবি রাজক্ষ কর, কোখা হরি দরামর,
দীননাথ দীনে কুপা কর।
ভুমি সংসারের সার, জগভের মূলাধার,
দরামর বাঞা পূর্ণ কর।।

রাজার কোটালগণের প্রতি জাদেশ। পরার।

ভূপের আদেশে সাজে যতেক কোটাল। করে নিল নানা অন্ত ঢাল ভরোহাল।। কেটালের পদভবে কাঁপিছে নগর। চোর ধরিবারে বায় জন্মর ভিতর ।। চলিল কোটালগণ কামিনীর বাবে। দেখিল কুমদ রায়ে কামিনীর পাশে।। ক মাদার গিয়ে ভার ধরিলেক করে। राधितम युगन क्रा नतम यात्र भरत। কেহ মারে গাতে ছরি কেহ মারে চড়। कुमम्द्रमाह्न खाँद्व इहेट्य काँकत्।। ट्यांत पति वारंत्र शिव नाकित महत्न। নাজির হাজির করে নুপের সদনে।। হলো মহা কোলাহল কান্তিপ নগরে। কুষদ কামিনীরে ভাবিছেন অন্তরে।। নাব্দির কহিছে চোর কোথার আলয়। কিবা নাম হয় ভোর কাহার তনয়।। কোথার এথানে বাসা কাহার ভবনে। কিবা ছাত্তি ৰল ৰেটা থাকিশ কৰ্মনে।।

क्मन कामिनी।

षानना कांशांत्र वाणि मतन नाहि छत्। বামন হয়ে চাও ধরিতে শশধর।। • গ্লাম বলে মহাশয় মন নাহি বিশ্ব। হৃদয়েতে হেরি সদা কপ কামিনীর।। সে আমাৰ মন প্ৰাণ শুধাংশু বদুনী। অবিরত বাসে চিত হেরিতে সে ধনী।। রাজা বলে ছাড বেটা মরিবি এখনি। ৰিচারিয়ে কর ডগু ভুমি নুপমনি।। স্থরাট নগরে বাদ কহি পরিচয়। সুরেশ্জ্য নুপতির আমি গো জনয়॥ বন্ধুর বিচ্ছেদে আমি হইয়ে কাভর। তেজে বাস করি বাস কানন ভিডর ॥ বছ ভাগ্যে হেরি তথা এক যোগিবরে। নিরবধি থাকে সেই কানন ভিতরে॥ ভাহার মুখেতে শুনি তোমার কাহিনী। বিচারে পণ্ডিত বড় তোমার নন্দিনী।। বাসা আমার বিমলা ভাঁভিনীর বাসে। तिहै त्यादि महाहेन किल वह काला। রার বলে মর বেটা বড়ই সুজন। किছूই कानमा जुमि नुरशत नक्त ॥ চুরি করে কাটো কাল ওহে কুলাঞ্চার। কোথায় কোটালগণ কররে সংহার।। ভাঁখি ঠেরে কোটালেরে মানা করে রাম। थाका मित्रा चांत्रि कांत्राशीदत लदत्र यात्र ॥ দেখিয়ে কুমদের গতি ভেবে আশাস। রাজক্বক ভাবি কৃক করিল প্রকাশ।।

কুমদ কামিনী গ কামিনীর আক্ষেপ। পরার।

অকালে প্রলয় একি হেরে প্রাণে মরি। (कन मधी अञ्च हत्वा वन विकारति।। किरमति कांत्रर्थ ध्रा श्राहर अध्रा। কাহার নেত্রের মলে ভাষিতেছে ধরা।। ভাবি বৃঝি নিশাকর পড়েছেন ধরা। कूमिनी करत रकन रहित अभी बता।। সেই ভয়ে প্রস্থান করেছে সুধাকর। ভাহার কারণে হলো উদর ভাক্ষর।। ধিকরে জামিনী জামি বলিরে ভোমারে। जूमि य यूक्त मम नाति वर्गिवादा ॥ কি দোযে করিলে ক্রোধ আমার উপরে। क्रिक्ट्रक्रूपोरेल कनय-गांत्रता मर्द ना मर्दर ना इश्व वाजिए याचना। সদয়ের ধন তার সংহ্না বাতনা।। প্রেম সুখ ভরুষরে প্রেমকল আন্দে। সত্রঞ্জ করি খেলা মনেরি উল্লাসে॥ णशास्य विशक नृश शहेन तकनी। निर्माकत मृद्धिवत रुद्ध प्रिम्मिश। विटक्ष विमान छात्र हिन हुई कति। क्तक कूरम छहे भारम छहे कहि॥ नाक्ष्मा शक्षमा हुई कारात जुतक। अके पृष्ठ अके ठात्रा कृतित्तक तक ॥ जानक नृপक्ति मम हिल्लम जानका। विटक् माक्क भागि कटन निवानत्य ॥

क्रम कामिनी।

বৈষ্যা মৃদ্ধি ছিল বনে পরম কৌভুকে। यदा रस कटत यस खायाहरनम प्रः 😢 👭 মন প্রাণ চুই করি ছিল মন রঙ্গে। প্রাণেশ্বরের কাতরে পলায় জাতকে।। বুগল নেত্র যুগল তুরক সামার। वृशत दुःक साति विशक्त कनात ॥ অন্ত অঞ্জ অন্ত বড়ে বছ কট পার। এই তরি এই তন্তুরক নজায়।। गरीभाव चुक्रिवत आति छुँ करन। কারাবদ্ধ করে রাখে তাপিত রাজনে। খাহার কিন্তিতে মাত হইল প্রভাত। কামিনী দাহিছে বলে শিরে দিয়ে হাত।। ্রোণনাথে ধরিলেক জমাদার করে। তাখা দেখি কামিনীর হৃদয় বিদরে।। জননী আসিয়ে কত দিতেছে গঞ্জন। আছে মুহ্মানে বলি সুধাংগু বদনা॥ জীবন ঘৌৰন ধন যে জন আমার। পারে বেজি গাতে দজি মারিছে ভাহার।। কেমনে হেরিব বল তাহার তুর্গতি। ছিগুণ বচন ছালা নিতেছে নুপতি॥ क कु:श करित काम त्थरम आग यात्र। আমার বৌবার অপ্র ব্যক্ত করা দার।। কত লোকে বিভা করে কেবা মারে কারে। क्या यात्र छोटत यल दाटश कातां गोटत ॥ রাম) গণ কর ধনী জাহা মরি মরি। কেমৰে বোণার অঙ্গে মারিভেছে ছড়ি।।

পাদে বেভি করে দভি দিয়াছে কেমনে।
সহেনা উহার ছঃখ সহেনা জীবনে।।
আমরা পরের ছঃখ সহিতে না পারি।
নাসে মন ভরে লয়ে ঘাই বাস ছাড়ি॥
মহীপাল পুণ্য কাল করিছে গর্জনে।
তাহার কারণে ভার সজল লোচন॥
মন ছঃখে হেট মুখে রয়েছেন রায়।
মলীন চন্দ্রাক্ত ঘেন দীন হীন প্রায়॥
সাবাসি পিরীত ভোর কি কব কৌতুক।
তুমি হে সকলে পার দিতে সুখ ছঃখ॥
কুপা কর ক্তেন্ত লাক্তে চরণে।
পায়ার প্রবিদ্যে রাজক্ত ঘোর ভনে॥

কামিনীর বিলাপ ও কুমদের চোর ধর।।
আক্ষেপ টক্তি পরার।
কুমদ পড়িল ধরা, কুমদ পড়িল ধরা,
তাহা দেখি কামিনীরে নাহি থার ধরা।
ধনী করিছে রোদন, ধনী করিছে রোদন,
নাথের দেখিয়া গতি করিছে রোদন।
হার একি হলো দার, হার একি হলো দার;
ভাহার লাগিরা মন ভেবে প্রাণ বারু।
ভার সহেনা যাতনা, আর সহেনা যাতনা,
সহেনা আমার প্রাণে তাহার যাতনা।
আমি ত্যজিব এ প্রাণ, আমি ত্যজিব এ প্রাণ,
শে আমার জান্ধি হার দে আমার প্রাণ।

कुमम कामिनी।

বল করি কি উপায়, বল করি কি উপায়, ভাহার বিরহে মম ভেবে-প্রাণ বার। द्याचा देवटान दममद्, द्याचा देवटन अगमत्, क मात्रीदृह रमश्री मांख भरता क नगरा। जूमि खानत मानत, जूमि खानत मानत, ভোগা বিনে কেই নাহি অধিল ভিছর। मन देधत का ना धटत, मन देधतक ना धटतः ভাষার লাগিয়া আণ দদত বিদরে। मना हत्यः वर्द्ध जीतः, जना हत्यः वर्द्ध मेतिः, ভাহার বিচ্ছেদে প্রাণ সমত অন্দির। আমি নারি যে সহিতে, আমি নারি যে সহিতে, আরু মল মল নারে বাদে যে রহিছে। नम् अटल गर्भागल, नम् अटल गर्भानल. কান্ত বিহুনে আমার থে করে শীতল। আমি ভাষার উদ্দেশে, আমি ভাষার উদ্দেশে, তেজে বাস সনোত্ঃথে যাব জন্য দেশে। (यात यद्ग पक्रम, भारत यद्ग पक्रम, ताबक्ष करर शरी महन मक्ता।

চোরের রাজ সভায় কথোপ কথন।
পাত্র বিজ্ঞ পণ কয় মৃপের সদন।
ভামভাবে বৃদ্ধি চোর নৃপের নক্ষন।
বাক্যের ছটার জ্ঞান হয় জ্ঞানবাণ।
নৃপের জনয় হবে হয় জয়ুমান।
ভানিয়া স্বার বাণী কছেন নৃপতি।
চোরে ভানিবারে পুনঃ কয় জয়ুমতি।

কুমদ কামিনী।

আজা মাত্র চোরে আনিল কোটাল গণে। जिळाटनमं महीभाग क्यमरमाहत्य।। সভ্য করি বল বেটা কোথায় আলয়। কীবা জাতি কার বেটা কিবা নাম হয়।। ক্ষোথা হতে এলি হেথা ছিলি কোন স্থানে। প্রকাশ করিয়া কহ মম সলিধানে।। ভূমি যে **নুপে**র সুভ জানিব কেসনে। নকর কীন্ধর কেবা আছে তোর সনে।। কভ দিন ছিলি ভুই কানন ভিতর। ्काथात्र ब्याटब्स ८४१त दमशा दयां भी वह ॥ সভা যদি ভূমি ভারে না পারে। দেখাতে। ্ডামার হইবে মৃত্যু কোটালের হাতে।। ্ৰখাতে পাবিলে তোৱে কিছু না বলৈব। জানিলে বিশেষ ভোর ভোরে ৬েভে দিব।। বাঁচিবার জাশা যদি কর বাছাবন : প্রকাশ করিয়া কহ ভাগোর সদন।। বিমলার বাটাতে কি সকা ভোর বাদা। বধিন তথনি তোরে করিলে তামানা॥ রায় বলে কিভি নাথ ভূমি দয়াময়। বধিলে বধিতে পার ভূমি মহাশ্র। जुमि यनि कत मद्रा छटन तांति श्राटन । কামিনীর কথ হেরি জামি ব্যানে জ্ঞানে।। শুনিলে আমার মৃত্যু সে ত্যজিবে প্রাণ। লে আমার আমি ভার দে আমার প্রাণা: শুনিয়া দ্বিশ্বণ স্থলে কাস্থিপের পতি। সানরে বেটার মাধা কাট শীঘগতি॥

कुमन कामिनी।

মরিলে জুড়াবে প্রাণ দে মম মঙ্গল।
ভারে না পাইলে মোর মরণ মঙ্গল।।
বিচার করিয়া দও কর নৃপাসণি।
ভাগারে বধিলে বিস্তু মরিবে দে ধনী।।
ইয়া বুঝে কর কায ভুমি মহীপাল।
কাটিলে ভামারে তব ঘটবে জঞ্জাল।।
নৃপ বলে ভরে বেটা নাহি চিতে ভয়।
কিঞ্জিৎ পরেতে দেখ কিবা শাস্তি হয়।।
রাজরুফ ভাবি রুফ রচিল প্রার!
তুমদমোহন রায় কি ভয় ভোমার।।
পাইবে কামিনী ভুমি ভোমার কি ভয়।

বিমলারে রাজসভার আদিতে রাজ্যর আদেশে ও কোটালগণের গ্রমন ! জিপানী।

নূপের আনেশ পেরে, চলে সবৈ জত হয়ে,
বিসলারে আনিতে কোটাল।
উপনীত তার কাসে, নগর খেরি চারি পাশে,
নানামতে দেয় গালাগাল।।
বত তবা ছিল তার, নিল আদেশে রাজার,
বিমলার কি কব প্রগতি।
রামা বলে একি নায়, নিধাইব কহে রায়,
চল যাব যথায় নূপতি।।
কোন দোবে ছবি নই, মিথাা ক্যা নাহি কই,

(क्न भारत कर कुरुवन।

कुम का गिमी।

હात शंखांनि कृष्ठेनी, किष्ट्र बानमा धर्मी. हल कार्म मुर्भन गमम।। घटत बामा मित्रा काटत, कथा कं श्रमः धादत, লক্ষা নাই তোর পূর্ণ নাশি। নুপের অন্ধরে চুরি, এ সব তোর চাতুরী, যার ক্রোধ ভোৱে দিলে ফাঁসি।। আমি থাকি একাকিনী, নাহি আমার নাদানী, কার করিত্ব কুটুনীপণা। कांत्र क्रूड। वश्व कांत्र, फिलू भिलादम् काशांत्र, यम आदिन मदहन। यो छना ॥ গালি দিলি বলে শালি, ভোর মুখে দিব কালী, काको यपि इन माञ्चकन। थेटन यांद्य टाइ सूर्य, मुद्दा याद्य मम छःथ, ভুমি ভারা সকলের স্কুল।। রক্ষেকর এ দানীরে, শাস্তিকর মূপভিরে, मञ्ज्या मा यात्र त्या कीवन । ष्ट्रारभण्ड डाविटल महनः दक्षित मा ह्य स्मान्यत्म छेलाप्र कि कति ला बर्ग ।। বিরিয়া মাগির কেশে, লাখি চর মায়ে শেষে, लटब योत्र तांकांत नम्टन। विभजा कानिय भटन, थटतदई वृक्ति तम कटन, देनका क्वा आंगिरत स्वरम ॥ ना दुरव करति है कांग, दर्भ वृद्धि महातास, প্রাণ যার ভাজি পর দার। हुब्राम कदिन सूर्य, वर्णिन जरमंब हुःच, . अ प्रःथ करिव आभि काम।

মরিলে জুড়াবে প্রাণ দে মম মঙ্গল।
তারে না পাইলে মোর মরণ মঙ্গল।।
বিচার করিয়া দণ্ড কর নৃপমণি।
আমারে বধিলে কিন্তু মরিবে লে ধনী।।
ইহা বুঝে কর কায ভূমি মহীপাল।
কাটিলে আমারে ভব ঘটবে জঞ্জাল।।
নৃপ বলে ওরে বেটা নাহি চিতে ভয়।
কিঞ্ছিৎ পরেতে দেখ কিবা শান্তি হয়।।
রাজক্ষ ভাবি কৃষ্ণ রচিল পয়ার।
কুমদমোহন রায় কি ভয় ভোমার।।
পারীতি করিতে গেলে সব সৈতে হয়।
পাইবে কামিনী ভূমি ভোমার কি ভয়।

বিমলারে রাজসভায় জানিতে রাজার আদেশে ও কোটালগণের গমন। ত্রিপদী।

নূপের আদেশ পেয়ে, চলে সবৈ জ্বত হয়ে, বিমলারে আনিতে কোটাল। উপনীত তার কাসে, নগর ঘেরি চারি পাশে, নানানতে দেয় গালাগাল।। যত তব্য ছিল তার, নিল আদেশে রাজার, বিমলার কি কব ছুগতি।

রামা বলে একি দার, বিশাইক কহে রার,
চল কাব হথায় নৃপতি।।
কোন দোকে ছবি নই, মিথা। কথা নাহি কই,
কোন দোকে কং কুৰকন।

खात शंखानि कृष्ठेनी, किंदूरे बानमा धनी-हन बार्श न्त्रत नमन।। चरत बांगा निम्ना लादत, कथा कञ्ज शूमः त्यादत, লক্ষা নাই তোর পূর্ণ নাশি। লুপের অন্ধরে চুরি, এ সব তোর চাতুরী, যার কোব তোরে দিলে ফাসি।। আমি থাকি একাকিনী, নাছি আমার নন্দিনী, কার করিত্ব কুটুনীপণা। कांत कुछ। वधु कांद्र, मिलू मिलारम काहादत. यम आदि। नेट्ट्ना यांजना ॥ भानि मिलि वरन भानि, छात्र मुरथ मिन काली, कानी गणि इन माञ्जून। चेटन सरिव ट्यांत सूर्य, जुटत सरिव मम कुःथ, তুমি ভারা সকলের স্কুল।। त्रक्क कत य मानीदन, लांखि कत मृशंकिदन, নতুবা মা যার গো জীবন। আগেতে ভাবিলে মনে, রহিবে না যে গোপনে উপায় কি করি গো এখন।। ধরিয়া মাগির কেশে, লাখি চর মারে শেষে. लट्य यात्र तांकांत नम्दर। विमला कामिल भाम, श्रत्राई वृक्ति रम करम, रेनल क्न जातिरत बरान ॥ मा दूरक करत्रहि कांग, वर्ष वृक्षि भरातान, - প্রাণ যায় ভাজি পর দার। कुकरम कदिन सूर्य, यहिन अद्भव हुःच, व कु:श कवित शांकि कात्र।।

ধাহা করেছিল মনে, এবে তা হেরি নয়নে,
ধন প্রাণে মজিল এবার।
হায় বিধি তুমি বাদী, হয়েছি হে অপরাধী,
কুপা করে কর হে উদ্ধার।।
ঠেকেছি বিষম দায়, এবে ভাবি প্রাণ যায়,
কুপাময় হরি কুপা কর।
রাজা কিবা করে দণ্ড, বুঝি করে প্রাণ দণ্ড,
ভয়ে প্রাণ হলো অর জর।।

বিমলারে লৈয়া কোটালগণের রাজসভার উপনীত।

পয়ার।

বিমলাবে আনিলেক নৃপের সভার।
হেট মুথে কোপ দৃষ্টে চেয়ে দেখে রার।।
জিজ্ঞানেন মহীপাল কহরে ভাঁতিনী।
কি জানিস তুই বেটা চোরের কাহিনী।।
কোর বানেতে কিরে সভ্য চোরের বাসা।।
সভ্য বল কর যদি বাঁচিবার আশা।।
কোথার উহার বাস থাকে যত জনে।
চুরি করে কত দ্রব্য রেখেছে ভবনে।।
কার বেটা কিবা নাম কিবা জাতি হর।
সভ্য করি কহ মোরে ভার পরিচয়।।
বিমলা কহিছে তুমি ধর্ম অবভার।
চোরের যা জানি কহি ছজুরে তোমার।।
শুনেছি উহার মুখে শুন হে রাজন।
স্থরাট নামেছে রাজ্য তথার ভবন।।

कुमम कामिनी।

क्रमराभारन नीम नृत्भन्न छनत्र। মম বাদে বাদা ওর আহি আহি কয়।। সুরেশচন্দ্র নপের উনি হে সন্দর। এই মাত্র মহীপাল জানি বিবরণ।। ত জ্জন গর্জনে রায় কহিছে কসিয়া। কোথারে কোটাল রাখ কারাগারে নিয়া।। উহার বুকেভে দেহ চাপায়ে পাষাণ। আজি কুটনীরে ভোর বধিব পরাণ।। কামিনীর বাবে চুরি তোমার ঘটনা। তোমারে কাটিলে সম পুরে যে বাসনা।। চোরেরে কেমন করে আনিলি যাসেতে। তার প্রতিফল আজি দিব বিশেষেতে॥ क्यान कतिनि कांच याम नाहि छह। বল বেটী কেব। তোবে দিয়াছে আশ্রয় ।। कुमन कहिए खात्रि महिना याजना। ভূমি তো ইহার হেডু যেনে কি জাননা॥ আমার আমি গো তুমি কামিনীর মাসী। মিলাইরা দিলে মোরে হইরা হিতাশী।। ভোমার কারণে মোর নাম হৈল চোর। চিতে মাহি বাস ভর পুন: কর জোর।। निका निलिटक सामात्र माबादत त्रम्यो । কামিনীর বাবে লয়ে যেতে ভূমি ধনী॥ এখন আমার প্রাণ চাহে যে ভাহারে। ना द्रात रा भारे छु:च कानारेव कारत ॥ विभवा कहिएह (कार्य नक्ता नाहि रहात्र। यात्र मात्रि कति চूति (गहे बला होत्र।।

রাজকৃষ্ণ কহে পথ্ট শুনলো ভাঁতিনী। আমিত জানি রে ধনী ভোমার কাহিনী।।

কুমদের রাজার নিকটে আকেপা আক্ষেপ উক্তি পরার। কহি শুন মহারাজ. কহি শুন মহারাজ, ক্ষেমা কর তুমি মোরে করেছি যে কায। ভূমি ধর্মের সাগর, ভূমি ধর্মের সাগর, কাটিলে কাটিভে ভুমি পার নৃপবর। णामि करति ए काय, श्रामि करति ए वार्य, বধিলে জামারে ইথে পাবে ভূমি লাজ। মোর মরণ মঞ্চল, भाइ यत्र मक्ता, ভারে না পাইলে মোর জীবন বিফল। ভারে হেরিতে বাসনা, ভারে হেরিতে বাসনা, ना (हरद काहात मन् देवतक धरतना ॥ काक करन यात्र (शरम, काक ब्राटन यात्र (श.म किया निमा खाल लाग छात्रात विस्कृत । ष्वामि भाति य बहिटक, ष्वामि माति य गहिटक, থেকে থেকে তার রূপ পড়ে যে মনেতে। मम हाक वार नीत, मम हाक हार नीत, কামিনীর বিহনে প্রাণ হতেছে অন্থির। আমি তাহার কারণে, আমি তাহার কারণে, নারী ৰূপে ঘাইতাম তাহার ভবনে। त्म (य लहेब्रा आयात्र, तम त्य लहेब्रा आयात्र, করিত যতেক রঙ্গ ভুলারে স্বায়।

ভাষি করেছিমু পণ, ভাষি করেছিমু পণ,
হারালে বিহারে তারে লইব কন্ধন।
ভাষি হারিলে বিহারে, ভাষি হারিলে বিহারে;
যতেক ভূষণ মম দিব যে ভাহারে।।
সে যে বিহারে হারিল, সে যে বিহারে হারিল,
হারিয়া বিহারে মোরে ভুষিতে লাগিল।
কর বিচার নৃপতি, কর বিচার নৃপতি,
বারেক ভাষিতে ভারে কর অনুমতি।।

রাজপুত্তের যোগির নিকটে গমন। পয়ার।

রাজা বলে শুন চোর কোথা যোগীবর।
যাও সুমি আনিবারে কানন ভিতর।।
তারে না দেখালে জোর বধিব জীবন।
নূপের আদেশে রায় করেন গমন।।
সফে দিল নরবর যতেক কোটাল।
আবে আগে চলে যেন কালান্তক কাল।।
পশ্চাতে রাখিয়া যার কত কত দেশ।
কানন ভিতরে হল উপনীত শেয়॥
ভাবেন কুমদ রায় কামিনীর ভপ।
দেখিল তথার এক মৃগ অপরপ।।
স্বর্গ জিনিয়া বর্ণ অভি মনোহর।
কপেতে করেছে আলো বনের ভিতর।।
যতেক কোটালগণ পথের আমেতে।
নিত্রা যায় জকাতরে কথা বক্রকেছে।।

কুরন্দ করিছে রক্ষ দেখি**ছে রাজন**। ভাবিছে এমন মুগ না দেক্কি कर्यन।। *কখন কুরজ হয় যোজশী ৰূপসী 🎉 क्थन कतिहा त्रम करत् लाग्न अनी।। ভাহা রেখি নৃপস্কুত ভাবে**ন লন্তরে**। क्ष निकारे जानि क्रक तक कात ॥ ভাবিয়া চিন্তিয়া রায় না পান সন্ধান। উচিত এখান হতে করিতে প্রস্থান।। উঠিল কোটালগণ প্লায় কুরন্স। **८**मथर काष्ट्रील श्रम कूत्रदक्षत तक ॥ कूमरमत वागी खनि रमचिरह नकटन। না পায় দেখিতে মুগ যার গবে চলে।। রায় বলে একি হেরি কাননেতে রঙ্গ। দেখিলাম জাজি জামি স্বর্গের কুরক।। নিশাচরী হবে বুঝি হন্ন অসুমান। হুরায় উচিত হয় ত্যবিকে এ স্থান।। বলেছিল যোগীবর মোরে যে বচন। त्नहे वाका चाकि त्यांत रल (र न्यूद्रव।। ভাগেতে ভাহার বাণী করিনে প্রভার। मिथिलाम छोड़ा खामि जगछव नम्र।। এইরপে এড়াইয়া কত কড স্থান। উপনীত হল শেহে যোগী সন্নিধান।। পুর্কমত যোগীবর জাছেন যোগেতে। रमिश्री कुमन द्राप्त छादमन सूदर्व ।। यरकक क्लोक्रीनंत्ररनं नक करत नीत ।

, ইকিছে বলিকে মবে কহিলেন ধীর।।

কুমনমোহন রার করিল প্রণাম।
কুপা কর যেন হর পূর্ব মনকাম।।
দেখিয়া কোটালগণ করে অমুমান।
সামান্যত নর যোগী এই হয় জান।।
ইহার কাছেতে পাব এর পরিচয়।
জানে যোগীবর হবে যথার জালয়।।
কেহ বলে দেবতা গল্পনি কিবা নর।
এইরূপে অমুমান করে পরস্পর।।
পিরীতের না পায়ে অন্ত শান্ত করি মন।
রাজরক্ষ ভাবে কৃষ্ণ হলে সর্বক্ষণ।।

যোগীর সহিত কুমদের কথোপকথন।
বানে হতে উঠি যোগী কহেন রাজনে।
পূনঃ বাছা তুমি হেথা এলে কি কারবে।।
এত দিন কোথা ছিলে কহ বিবরণ।
কি কারণ হেরি এত বিরস বদন।।
সবিশেষ বিচরিত্র শুনিতে বাসনা।
প্রবঞ্চনা মোরে বাছা করোনা করোনা।।
তোমার মঙ্গলে হয় আমার মঙ্গল।
ভিনিলে ভোমার ভাষা নেত্রে বহে জল।।
কি কব ভোমারে আমি যত ভাল বালি।
হেরিতে ভোমারে বাছা সদা অভিলাবী।।
কান্তিপ নগরে করে ছিলে কি গমন।
কহ শুনি চন্দ্রচ্ছ কেমন রাজন।।
হেরেত্র মন্তমে কি গো ভাহার নন্দ্রনী।
ক্রমন প্রাণী তহ কুমারীক্রামিন্নী।।

(**62**)

विश्व कि रख़ार छोत्रं कुमें मर्गाहम । विठादत जिनित्री छोटत निरम दकान सन ॥ রার বলে মহাশ্র কর অবধান। বিবরিয়া কহি শুন তব সন্নিধান।। थक निन हिलाम त्यां कांखिश नगरंत। বাদা করি থাকিভাম বিমলার ঘরে।। तिहै भिलाहेबा दिन मुर्शित कुमाती। তাহার বিরহ জালা সহিতে মা পারি।। কামিনীর ৰূপ আমি খেরি যে নিয়ত। না হেরে ভাছারে প্রাণ হলে। ওঠানত।। ষাইতাম নিশি হোগে নিত্য তার বালে। নারী বেশে থাকিতাম কামিনীর পাশে।। এইকপে নিত্য নিশি করিয়া যাপন। প্রকাশিয়া কহি শুন দৈবের ঘটন।। এক নিশি কুতুহলে মাতিয়া তর্কে। ত্বনে ছিলাম মোরা কৌভুক তরকে।। न्द्रश्च निमि পোराहेन इः श्र द्रश्चिमा কুউদিত লুপ বাসে লয়ে ছঃৰ রাশি॥ কলন্ত কিরণে তার আফাদিত করে। कुलनाम पुराहेन क्लक गांगदर्ग। অনঙ্গন্তরী সে রবির রাছগ্রহা ভাহার গ্রহণে রার দিলেন নিপ্রহ।। क्यापात करत इस पहित्यक करत । वीषित्रा यूनन करत नहक दनन बद्धा। ना कानि असन दृद्ध देवदेव यहेगा। क्विडिएम् करे शामि ना इस वर्गा।

क्मन कामिनी।

যে যাতনা সহেছি গো কৰ কি কৌতুক ! শत्रम जलान मान लाए जात्र मूर्य ।। অতএব কুপাময় হও সামুকুল। রূপা করে ভুমি মোরে যদি দাও কুল।। তা হলে বাঁচিবে প্রাণ পাব পরিবাণ। নতুবা ভূপতি মোর বধিবেক প্রাণ।। ভব ভুল্য মৈত্র মম নাহিক সংসারে। এবার বিপদে ভূমি বাঁচাও আমারে।। নৃপের আলরে চল ডুমি রুপা করি। নাহি যদি যাও তবে আমি প্রাণে মরি॥ শুনিয়া কহেন যোগী ভেৰনা রাজন। कर शांलि यात्र यपि आत्रात कीवन ।। তথাপি তোমারে কেহ নারিবে বধিতে ৷ হবেনা হবেনা রাগ যাতনা সহিতে।। ষুচাইব ভব ছঃখ যাইব আপনি। কামিনী পাইবে ভূমি শুন ওণমণি॥ निम्छत्र क्यानिन्छ देश नाहि कत छत्। অবশ্য যাইব আমি কান্তিপ নগর।। क्षरत्र कृटकात शव कांवि मत्न मदन। পরার প্রবন্ধে রাজকৃষ্ণ ঘোষ ভবে।।

কুমদের সহিত হোগীর রাজ সভার উপনীত।
কুমদের বিনরেতে তুই বোগীবর।
বলে বাছা চল ষাই কান্তিপ নগর।।
সূত সমজাল বাসি ছোমারে রাজন।
শুনিরা ভোমার ছাখ বিষাদিত মন।।

कुमन करिए अष्ट्र जुमि नतामत। विलट्स शिख्त कृति निक् श्रेमाळा ।। এড়াইয়া কত স্থান শেষে যৌগীবর। উপনীত হল গিয়া কান্তিপ নগর।। कुमदन कदरन योशी खन वाष्ट्रांपन। কোথার নুপের বাস কহ বিবরণ ।। রায় বলে মহাশর কিঞ্চিৎ দূরেতে। নৃপের চিজিয়াখানা ইহার পরেতে।। তাহার ভিতরে আছেযতেক বিহঙ্গ। বন যন্ত আছে কত ভুজন্স কুরন্স 🛚 ভাহার পশ্চাতে ধীর নূপের আলয়। অতুলনা সেই পুরী তুলনা না হয়।। চারি পার্শ্বে গড় ভার অতি মনোহর! তথার থাকেন নৃপ শুন গুণাকর।। উপনীত হন যোগী নৃপের সভার। মহা সমাদরে রায় সভাতে বসায় !! সভাস্থ সকল লোক নত করে শির[া]। যোগী কন থাক সুখে পাশে নুপতির।। হরিষে হরহে কাল এই বাঞ্চাুকরি। পর স্থাধ সুখী আমি পর ছাথে মরি।। আজি বড় শুভ দিন কহেন রাজন। বুড়াল ভাপিত প্রাণ হেরে জীচরণ।! সদত বাসনা পদ হেরি গো নিয়ত। রূপাকর যোগীবর আমি জ্ঞান হত।। ভার এক নিবেদন করি সন্নিধানে। চোরের কি নাম হয় বাস কোন স্থানে।

कृषण करियोग



किता बाठि कार दिने बादनेन विरमय। कांग्रिल छेशांद्र हुः थ मोशिश्व (मरा।। य कर्च करब्रिह भाव ना इत्र वर्गना। আমার জন্দরে চুরি করিয়া ছলনা।। শিখাইতাম উহারে করি কি উপায়। নাচারে পড়েছি প্রভু ভেবে প্রাণ যায়। कलक यूष्टाटक निम्ना कलक किमित ! क्रमदेशत धन कोत छु:थे कि दम्थित।। क्रियरन गरिव वल इहेश निर्कृत। ক্রোধেতে কাপিছে অঙ্গ জনক ঠাকুর।। কেন বা না কহি নোরে করিলে এ কায়। ইহাতে কাটিলে ওরে নাহি কোন লাজ।। যে বেমন কর্মা করে তার দণ্ড আতে। কোধেতে করিয়া কর্ম পণ্ডাইন পাছে। কর্মা দোধে নিজ নাম হীন অভিশয়। আপন ক্লার্য্যেতে ভোষ্ঠ ব্যক্ত বিশ্বময়।। যোগী কন গুন রায় কহি পরিচয়। কুমদনোহন নাম সুরাট আলয়। यूद्धम्बद्ध नुश्चित्र कनिर्छ नम्बन। বন্ধার বিচ্ছেদে ইনি ভালিয়া ভবন।। নিরাহারে অমিতেন কাননে কাননে। देवद त्यांदध छेशनी छ व्याभाव भवत्व ॥ কহিয়াছিলান ওরে ভোষার কাহিনী। কামিনী নামেতে আছে ভাহার নন্দিনী।। বিচাৰে পণ্ডিত বড় নবিনে সে ধনী। জিনিলে ভোমারে তারে দিবে নৃপমণ্।।

कृमम कामिनी

33

কান্তিপ নগরে বাস স্ক্রিখ্যাত নাম। ভাহার সভাতে তুমি যাও গুণ ধাম।। বিচারে হইবে জন্ন নুপের সভান। স্থভাগনে দিবে বিভা চন্দ্রচূড় রাম ॥ किছू निम थांकि छथा यांदा निक वांदा। পাঠাযেছিলাম আমি এই অভিলাবে।। পরম পণ্ডিত রায় কুমদমোহন। তব শুভাসনে বিভা দাও হেরালন।। ইহাতে নাহিক লাজ নুপের জনয়। উহ'রে কামিনী দিতে উপযুক্ত হয়।। গোপনে করেছে কাষ না কহি ভোমারে। এই মাত্র দোষ নুপ ক্ষমহে উহারে !! জামতার যক্ত বটে চায়ে দেখ রায়। নাহিক ভময়া মোর কি করি উপায়!। আহা মরি কিবা হাসি না দেখি স্বরূপ। क्ममत्यांश्त कन्या मान कत्र जूराना রাজা বলে মহাশয় করি নিবেদন। ক্রোধ আঁসি সদা মোরে কর মিবারণ।। আপনার বাক্য আমি লব্জিতে না পারি। অবশ্য কুমদে আমি দিব হে কুমারী।। কুমদমোহনে রাম কহেন যতনে। কেনবা করিলে ভুমি না কছে গোপনে।। নিজ দোবে পেলে ডুমি তার প্রতিকল। क्मन कहिएह अञ्चल भग मक्ना। বারেক হেরিলে ভারে ছঃখ দুরে যাবে। त्म त्य श्रागंधिक थन आभारत तम भारत।

कुमम कामिनी।

রাজকৃষ্ণ ভাবে কৃষ্ণ সমত অন্তরে। দীননাথ কর পার এ ভব সাগরে।।

কুমদ কামিনীর রাজা কর্ত্তক বিবাহ যোগীর বচনে জুফ্ট হইয়ে রাজন। কামিনীর বিবাহের করে আয়োজন। পাত্র মিত্রগণে কম নিমন্ত্রিভে সবে। রীত্রমিত আছে যাহ। না করিলে নয়। প্রতেতে হয়িতা পরে রুজনার হয়।। রামাগণ আদি সবে হরিটা মাথায়। পুলকে পুৰ্ণিত হলো হেবে দুজনায়।। এয়োগণ উলুধ্বনি দেয় অবিরত। সুখ নিশি সুউদিত দুঃখ নিশি গত।। বিবাহের দিন স্থির হলে। লগ্ন মতে। कना। मान मधीशांल करतन ता गर्छ।। নিম্প্রিতগণ আসি হলো উপনীত। দ্বিজগণে চিস্তা করে নৃপতির হিত।। পাত্র নিত্রগণ আদি যতেক আমাতা। সভাষ্ট হইল সবে হইয়ে কুঠার্থ।। माना गटक वाकिएड हिविध वाकना। কালয়াত গুণিগণ ক্ত শত জনা।। বাজিকর বাজী করে অভি চমৎকার: দে কথা কহিতে পেলে বর্ণিতে অপার।। পুরোহিত মন্ত্র বলে শান্ত্রের বচন। मञ्जामान करत नुभः त्रक्र कथिन।।

বিবাহ নির্কাহ হলো পরে জ্রী আচার। বাসর গৃহেতে যান নুপের কুমার।। যত পুরবাদীগণে করিছে কৌতৃক। . पूरत राज मन जुःथ छेथ्लिल सूर्थ।। क्रबनात यन क्रःथ हिल एक यटन। বিচ্ছেদ মিলন হলো শুভ সেইকণে 🛭 জ্ঞাত্তি বন্ধু আদি করি যত মিত্রগণ। সুখেতে সকলে রাজা করাণ ভোজন। ভোজনাত্তে নিজ বাবে সবে যায় চলে ৷ ভূধরের যশ ব্যাখ্যা করিয়ে সকলে।। कूमिनी कूमरम्त छेमिटक श्रीदि । रहतिहा युगल निट्य हति एव वितिष । রামাগণ ভারাগণ রমেছে ঘেরিয়া। রতি রতি পতি যিনি যুড়ার হেরিয়া॥ বাসর সুশ্যা করে সকলে যভনে। হাস্ত পরিহাস্ত করে কুমদের সনে।। সভাস্থ সকলগণ কামিনীর দল। কামিনীর বাবে সবে করে কোলাছল। পালঞ্চ উপরে বৃদ্যে কুমদুমোহন। মহিষী আইল তথা করিতে বরণ।। वत्र कतित्र तानी साम निक वादन । রামার্গণ নৃপস্ততে বিনয়ে সভাবে।। काभिनी कहिएह नाथ नाहि हिल मरन। পুনঃ মোর দ্বেখা ছবে আর তব সনে।। নিয়ত নেত্রের নীরে বৃক্তেবে যেত। क्व मानि क्रब्रहिन् कीवनास बक्र॥

क्रम का मिनी।

আশা কপ নীর আমি করিরে ভক্ষণ।
করেছি হে প্রাণনাথ জীবন ধারণ।।
কদমের চাঁদ তুমি হওহে উদয়।
তব অদর্শনে হেরি সব ক্রফময়।।
আনন্দ কীরণে নাথ নাশ ছংখরাশি।
আমি চকরিনী তব সুধা অভিলাবী।।
বাক্যের তরক্ষে হল অরুণ উদয়।
দেখে সভা কিবে শোভা বর্ণন না হয়।
সুউদিত প্রভাকর লয়ে সুখ করে।
গোনন্দেতে রামাগণ যান স্থানাস্তরে।।

কুমদ কামিনার রহাক্ত।
নাগর নাগরী দোহে বিচ্ছেদে মিলনে।
মাতিল দিগুণ সুথে চেয়ে সকোপণে।।
নিরত কিন্তরীগণ কাছে নিয়েজিত।
কুমদ ভাবিছে বানে যাইতে উচিত।।
কেমন আছেন মম জনক জননী।
মম লাগি কাঁদিতেছে দিবস রজনী।।
ভতএব কহি প্রিয়ে যাইব জালয়।
চিত্রেতে নাহিক সুখ ছংখ সাভিশয়।।
কামিনী কহিছে নাথ যাব তব সনে।
কিছু কাল খাকি হেখা যাইব ছজনে।।
এডদিন ছিলে তুমি সদা মন ছঃখে।
এবে নাথ কিছু দিন থাক হেথা সুখে।।
রায় বলে রসবতী নারিব রহিতে।
ব্যাকুল হয়েছে প্রাণ না পারি খাকিতে।।

নিতান্ত ভোমার যদি থাকিতে বাসনা। তিবে মোরে বিধুমুখী করোনা ছলনা।। পুনর্বার আসি আমি যাইব লইরা। ছবার বিদার কর রাজনে কহিয়া।। धनी रत्न क्षांगनाथ क स्रात रकमन। কেমনে নিৰ্ছুৱ হয়ে কহিলে বচৰ।। ভূমি মম ধন প্রাণ গুণের সাপর। আমারে ভাজিয়া যাবে সুরাট নগর।। নাহি তব দয়া ধর্ম একি হেরি ধারা। হেরিয়া ভোষার ধারা নেত্রে বহে ধারা॥ তোমার কি ক্ষতি নাথ পাইবে ভূতন। আমার হইতে আর করিবে যভন।। যে ছঃথ দে হবে মোর কব কি ভোমারে। তোমার যুজাবে প্রাণ ছেরিয়া তাহারে।। কিন্তু অধিনীর প্রাণ নহে তব মত। তোমা বিনে अना अत नाहि मन तक।। कहि खन श्वनिधि यांद्र निद्रक्ट्रान। তবে মোরে কুপা করে লবে যেও সমে।। क्व जन्मित्र आमि का जिव की वन। নিয়ত বাঞ্ছিত চিত হেরি সর্বক্ষণ।। পুরাতন হলে নাথ যতন কে করে। ञुङ्द ञुङ्द नमा तरि नमाम्दत् ॥ প্রথম মিলন হলে যত সুখোদর। কিঞিৎ পরেতে দেখ নাছি তত রম্ন।। कूमन करिट्ड थनी क्रमा इलना। त्रांक्क्ररक कड प्रत्र कत्रांग वर्षना ॥

क्षमनभारत्वत्र ताकात्र निकटि श्रामण गाइवात व्यार्थना ।

প্রভাতে উঠিল নূপ হরিব অন্তরে। कुमरम वर्गान कारहे श्रेत्र कांमरें ।। গুরু পুরোহিত আদি সবার সদলে। জাসভারে কন রাম বিনম খচনে।। किছू मिन थाक वांছा आयात्र नगरत । অন্তরের ধন ভূমি রাখিব অন্তরে।। কামিনীরে দিয়ে জামি পেরেছি ভোমারে। असदा दर्खना कञ्च जुलादा जामादा ॥ ক্ষদ কহিছে ভন করি নিবেদন। গত রজনীতে আমি দেখেছি সপম।। জনক জননী মম পতে ধরাসনে। আবণের ধারা সম বহিছে নয়নে ।। তাহার কারণে সদা আছি মন ছঃখে। বাসনা যাইৰ বাসে প্রম কৌডুকে ।। বিদার আমারে কর নূপ মহাশয়। चढ़ यह करनवह कके गाडिभद्र।। ৰছ্ছিন হল আমি তেকে আদি বাস। কানন ভিতরে গিয়া থাকি অফী মাস।। তথা হতে তব বাবে আছি কিছু কাল : ছরায় বিদায় দেহ মোরে মহীপাল।। নিভাস্ত ঘাইৰ বাসে করেছি বাসনা! य इःच (अर्छिहि क्षार्य ना रह दर्गना।। রায় বলে বাছবিদ শাস্ত কর মন। তাহার কারণ কেন এত উচাইন।।

टेक्टवत घडेना यांश इटब्रट्ड घडेना। ক্ষমিবে আমারে তুমি তা ভাবি তেজনা !! ্ এই সদা চিতে সাধ লোচন ভরিয়া। मित्रो विভावति द्हति नम्दन ताथित्रा । কিঞ্চিৎ বিনয় কর জানায়ে আচার্য্য। বাসেতে যাত্রার দিবা করাইব ধার্যা। কোত্যাল চোপদার যতেক আমার। রাখিয়ে আসিবে গিয়া আলয়ে ভোমার।। রায় বলে মহাশয় কি কায় কিন্তরে। কিঞ্চিৎ নাহিক ভর তব ক্রপা গোরে॥ गाहैव घटनक शथ धरे मना छति। ইহার কারণে ঢাহি দিতে হে প্রহরি।। সভাস্ত সকলগণে আদেশিল রায়। আনিবারে গৃহাচার্য্য তাহার সভায়।। ভানিবারে চোপদার যভেক চলিল। আনিয়া আচাৰ্য্য সবে ভুজুরে ভেটিল।। নুপ কন গৃহাচার্য্য দিবা কর স্থির। कामका वादन वादम स्टब्स्ट अस्तित।। শুভ দিনে শুভ ক্ষণ দেখ শুভ তারা। বিচারিয়া দেখ সবে কেবা কোথা তারা।। জ্যোতিযের মতে দিবা কর নিরূপণ। যে যোগে করিলে যাত্রা অসাধ্য সাধন 🖟 এমত দিবস দেখ করিয়া গণনা। ষে য়াত্রায় নাহি ঘটে বিপদ্ ঘটনা॥ গুছাচার্য্য কন নূপ করি নিবেদ্র। গত কলা শুভবিন অভি শুভকণ।।

চন্দ্র তারা শুভ আছে উত্তম বাদর।
উক্ত দিবা কর স্থির তুমি নৃপবর।।
যাত্রার সুকল হবে শান্তের বচন।
উক্ত দিনে জামতারে পাঠাবে ভবন।।
অত্যম্ভ উষাতে যাত্রা করিছে বিধান।
যোবা ইচ্ছা নরবর কর প্রমিধান।।
রাজহুক ঘোষ ভনে রটিয়া পরার।
কুমদনোহন বানে যাইবে এবার।।

কামিনী দহিত কুমনমোহনের বিদায় সভা করি বসিলেন চন্দ্রেড় রায়। পাত্র মিত্রগণ আদি লইয়া সবায়।। কোভয়াল চোপদার কাতারে কাতার। দণ্ডাইল সবে মেলি সদনে রাজার ॥ নকিব কুকারে সদা হরিষ অন্তরে। কোলাহল অন্নথ্যনি সকলেতে করে।। পাত্র মিত্র গণে রায় ক্রেন ভথন। ক্মদে ভাগুরি হতে দেহ বছ ধন।। রজত কাঞ্চন আদি ভূষণ প্রবল। বুমদমোহনে দিতে কহেন ভূগাল।। আনিল কিন্তুর গণে নৃপের আদেশে। নিয়েজিক অবিরঙ বিশেষে বিশেষে।। गलिका यालको छुद मक्त मानी मिल। কুমদমোহন রায় ভূষিতে লাগিল।। जूमि मर्मे दन खान (तथ दिशे मति। তোষা সম কেহ নাই এতিন ভুবনে॥

श्रुनः मन धारम करत श्रुत काश्रमन। প্রকাশিয়া কহ শুনি নৃপের নন্দন।। রায় বলে মহাশার ভোমার ভমর। হেরিতে বাসনা সদা তব **পরে**দদর।। প্রাণের অধিক মম কুমারী কামিনী। याशदत ना द्रारत जावि मिवटन यामिनी।। তাহারে তোমারে বাছা করেছে আর্পণ। দেখ রেখ গুণমণি আমার জীবন।। করি অশ্ব আদি ভরি ধেবা ইচ্ছা হয়। বল তুমি বাছা কিলে যাইবে আলয়।। कूमन करश्न नृश कति निरवनन। তরি আরোছণে বাসে করিব গমন।। छ। इटल ब्रांग्न छेपनीड इव शिक्रा। বছেনা বিলয় দেছ সুদায়া করিয়া।। শুনিয়া কহেন নৃপ ডাকিয়ে কিন্ধরে। নাবিক গণেরে যাও আন ছরা করে ॥ আক্রা মাত্র দূতগণ চলিল ভখন। चानिन नाविक शरा नुरशत मनन।। নুপ কন কর্ণধারে আনিতে ভরণী। জামতা বাসেতে মম যাবেন এখনি।। सूत्रां ने नगरत नरम याहरत ख्याम । সাবধান করি ছরি বাহিবে জ্ঞাম।। कुमन अनाम करत तालाद तानीता । फूर्ता क्र्मा विल जान वाणित वाहिरत।। कामिनीत करत पति महिसी कहिए। ত্রবির্ভ শত ধারা নমনে বহিছে।।

कू मंगका मिनी।

কেমনে রহিব আমি না হেরে ভোমারে। জননী বলিয়া কেলো ভাকিবে আমারে!। चुना भूती करत सम याहरत जननी। यन द्वः तथ त्र काश्य स्वित त्रक्रमी ।। শুনিলে ভোমার ধানী ভাষিতাম সুখে। এবে যাবে চলে ভুমি ভাসাইয়া ছঃখে।। অক্ষের নয়ন ভূমি দারিজের ধন। হৃদয়ের ধন ভূমি অমল্য রতন।। বারেক না হেরিলে গণিতাম প্রমান। এখন সে সাথে মম ঘটিল হিসাদ !! कामिनी विनम् कति करिएइ हानीतः। **जिंक्टिक विश्वश्री मंत्रत्व मीट**त् ।। ভেবনা জননী তুমি হওনা কাতর। আসিব এখানে পুনঃ কিছু দিন পর !! প্রবোধিয়া জননীরে নত করে শীর। হর্ষ মনে যায় ধনী বালীর বাহির।। মহাপা হইতে দোঁহে উঠিল ভরিতে। (मोका वाहि भए। छति थूनिन चुतिरछ।। বাহিতে লাগিল ভরি দিবস রক্ষনী। कके मिर्त कामीशारम मंझहिल उत्रेशी।। कर्नशादत कम तात्र शतिम असदत। वाजना द्वित शिक्षा राज्य विष्यंगद्र ॥ এই স্থানে রাখ তরি শুন বাছা ধন। किছু पिन এই স্থানে করিব যাপন।। কাশীধানে উপনীত নুপের কুমার। त्रा**बङ्गः धा**व क्य त्रिया श्रवात ॥

কুমৰ কামিনীর কাশীধামে উপনীত ও মণি নাপিতিন কৃষিত কুমদের সাক্ষাৎ।

তরি হতে নৃপ স্তত উঠিয়া সম্বর: হেরিবারে চলিলেন দেব বিশ্বেসর।। যুগলে যুগল রূপ করে দরশন। অমিতেছে কাশীধামে বাসার করিণ।। ফেনকালে নাপিতিনী আইল তথায়। (श्रिय) क्याप धनी विनाय सुधाय।। কি কাবণ ভ্রমিতেছ হেরি আরে ছারে : প্রকাশিয়। কহ মোরে তত্ত্তর কারে॥ এদেশী নাহিক হতে করি অনুমান। অনুভাবে বৃথি তুমি ধনির সন্তান।। আমারে কহিলে পাবে বৰ বমাচার। কিবা আস কোথা বাস কহছে ভোমার 🗅 * কুমদ কহিছে শুন ম্য প্রিচয়। कुमम्द्रमाहन गांच स्ट्रांटि जानत्र॥ অন্ত জানিয়াছি হেখা ঠানা নাহি পাই। বাদার কারণে মোরা কিরি ঠাই টাই।। মিলাইরা দেহ বাসা করণা প্রকাশি। ভামি তব সূত সম ভূমি মম মাসী।। মণি বলে গুণাকর তুমি ভাগ্যধর। क्रभा करत हेल यंगि किश्विद असूत ।। ভা হলে পারিষ দিতে উত্তম আলয়। তথার করিতে বাস তব যোগ্য হয় ৷৷ তাহার দক্ষিণে হয় আমার ভবন। নিয়ত হেরিব আমি গিয়া এচরণ।।

কুমদ কহেন চল ঘাইব ভথায়। কিছু দিন আছে আন থাকিতে হেথায়।। अडे क्रांभ ठिलंदान क्रमम्याह्म। মণির সক্তে জান বাসার কারণ।। ধার্য করি তথা বাসা নৃপের কুমার। তুরিতে তরিতে জান রায় পুনর্ফার । ডাকিয়া নাবিজ গণে ক**হেন সন্তর**। ভূলিতে সকল দ্রব্য স্থলের উপর।। সাক্ষা মাত্র দুলিলেক নৌকা বাহিলণে। বাসাতে রাখিয়া এল স্কলে যত্তে। रक्ष धन फिल माच छडिस करहाता। যাইবারে এন করে কান্তিপ নগরে॥ (काभद्र) मण्डल या अ मुद्रश्रद मन्द्रम । शिविष्णय दिवत्य करित्व स्थित्यं ।। চলিল মাধিকলণ খুলিয়া তর্থী। यारिएक मानित कपि मितम प्रस्ती।। कुमक का मिनी भोटिश हुद्रविष्ठ महन। কানী ধানে করে তাস আমণে হুন্সনে॥ এক দিন 🚽 । সুত স্থির মন্দিরে। পিয়া ছিলেন দিবলে হেরিছে মণিয়ে।। देमदादशास्त्र ८ इ. इ.स.च वक् विकास है। যাহাতে মজিল মন কুমনের চট।। वाग्र वर्टन अला मानी वन ला काहिमी। এই পটে লেখা ৰূপ কাহার নিদ্দনী।। মণি বলে বাছাধন আছে তাতে লেখা। পজিলে পশ্চাতে তার পরে পারে দেখা॥ প্রেমের না পায়ে অস্ত ভাবি ছরি সার। রাজক্রক ঘোষ কয় রচিয়া পরার।।

তুমদের আক্ষেপ ও মনির কিশোরীর নিকটে কুমদের পরিচয়। প্রযার।

চিত্র পটে হেরে চিত্র হতেছে অস্থির। দেই রূপ হলে মনে নেত্রে বংহ নীর । সেই মুখ হেরিবারে সদত বাসনা। क्रमा कवि मिर मिथा सुराध्य उपना।। মণিৱে কংখন রায় কছ বিবরণ। কার চিত্র গাট করিলাম দরশন।। অণি বলে নিবেদন করি নুপাবর। ইস্কান্ত নাহে আছে এক মনাগর।। তাহার নিদিনী এই দেখ জগমণ। दमनीव भीरवामनि त्य हानवननी।। (महे पड़ा यात्म थना इत्त (यहे शिक्ति। কত সুখে সেই জন ভুঞ্জিবেক রভি।। নাম তার কিশোরী দে পরমা রূপদী। ছার জপ হেরে শশী ভূনে পরে খসি।। সেইকপ বারেক যে হেরেছে নয়ন। কটাক্ষ শরেতে তারে বিধেছে যতনে !! রাম বলে সে ধনীরে হেরিব কেমনে। সদত জাগিছে সম সেইক্রপ মনে। চিত্র পটে হেরে চিত্র হতেছে চঞ্চল। ल्हेक्न रल माम दनता वटह सन ॥

কেমনে হেরিব বল করি কি উপায়। মিলন অভাবে ভেবে ভেবে প্রাণ যায়।। নাপিতিনী বলে কহি শুন হে রাজন। তব বাসা হতে ভারে করার দর্শন।। নিত্য ছে আল্তা নিতে ঘাই তার পায়। ষত্য গিয়া তার বাদে দেখাব তোমার।। যথোচিত ভাল বাদে আমারে সে ধনী। আনি আমি কলে মোরে ভাহার জননী। সে আমারে মাসী বলে ক্রুণা প্রকাশি। প্রাণের অধিক আমি তারে ভাল বাসি।। ভোমার কুট্রিম পরে থাকিবে বতনে। ভাহার কুটিমে মোলা থাকিব ছজনে ॥ স্থান করি ভার বাবে হাও আবেগ মানী। হেরিলে তাহারে আমি আমন্দেতে ভাগী !: নভুৱা ভ্যান্তির প্রাণ ভাষার কারণে। নিয়ত বাঞ্চিত চিত হেরিতে নয়নে।। यनि दरन हिलाम किर्मातीह कारह । কিন্তু বাসি মনে তর বাক্ত হয় পাছে 🖯 ইশ্ৰুকান্ত মহে শান্ত ক্লুভান্ত সমান। এ কথা গুনিলে কর্ণে বধিবে পরাণ।। ভাবিয়া চিস্তিয়া ধনী যায় ভাড়াতাজি। উপনীত হলো যথা সাধুর কুমারী 👭 मिथल किर्लाही शृंदर बार्ड्न मग्रत। किरमात्री किरमात्री वटन छाकिटह यक्ता छिनिया मानित यमो छेठिल किल्लावी : মণি বলে বাছা তব ছংখ ভেবে মরি।।

চারি দিন হলো আজি দেখিনী ভোমারে।

যে ছঃখে ছিলাম আমি নারি বর্ণিবারে।।

যুরাট নগরে বাস নূপের কুমার।

কুমদমোহন নাম বাসা কাছে তার।।

মাসী মাসী বলে মোরে বড় রূপবান।

অবনীতে নাছে হেরি তাছার সমান।।

কিবা ত্বর পিক্ষরত শুনিয়া পলায়।

হেরিলে তাহার আঁথি মৃগ লাজ পায়।।

গগনের শনী ভূমে পড়িয়াছে গসি।।

খনু সম ছই ভূম কিবা তার হানি।

হেরিলে তাহারে মন বাসে হতে দাসী।।

কুমদের হেরে রক্ষ রাজক্লক কয়।

দীননাথ দীনবদ্ধ দিও পদাশ্রয়।।

কুমদের কিশোরীর সহিত মিলন ও কিশোরীর আক্ষেপ
বুমদের কাণ শুনি ভাবিছে কিশোরী।
মণিরে কহিছে মাসী উপায় কি করি।।
কেমনে হেরিব ভারে বল গো আমায়।
না হেরিলে ভার কপ ভেবে প্রাণ যায়।।
কি কথা কহিলে মাসী ক্লয় বিদরে।
মিলন বিহনে মন ধৈরজ না ধরে।।
একে অভাগিনী ভাহে চির বিরহিণী।
আমার সমান কেহ নাহি অনাথিনী।।
যৌবন হইল গত বিভা নাহি হলো।
প্রেমের মালঞ্চে ভক্ল বারি বিনে মল।।

তাহে কোকীলের শ্বর শ্বর জান হয়। বুকে ছঃৰ মুখে হাসী প্ৰাণে নাহি শয় 🖽 মণি বলে বিনোদিনী ভোমার বিরহে। অহর্নিশি তার প্রাণ অহ রহ দহে।। চিত্ৰপটে তব ৰূপ করে দর্শন। চিত্ৰেতে নাহিক স্থা বিষাদিত মন ! বাস্তনা করিয়া ভারে হাখিয়া ভবনে । ভোমারে দেখার বলে এসেছি বছনে।। ভাশাবারি করে প্রাণ ভাশা করে ভর। তব আশে পথ চাহি আছে নিরস্তর।। এই তব বালাখান। বাটার উপরে। সাধ থাকে হেরিবারে চল মন চোরে।। তথা গিয়া সঙ্গোপণে দেখিবে নম্বন। फुक्ट मेर्य यादद दृश्य द्वित्री फुक्ट में !! নে আছে কুট্টিম পরে স্নাশে হেরিবারে ভাই আদিয়াহি হেথা কহিতে ভোমারে। किल्लावी कहिएह भागी (इस किस १८व) ं विधि कि मिलार्ड मिरन तरमत अर्गत ।। চল চল ভবে যাই জীবন জুড়াই। সে আমার ধন প্রাণ যদি ভারে পাই।। जारकारक नम्रन (भटन यक सूर्या नम्र। कामात करता १८व भूर्ग हत्कामत ।। कुर स्थात कुर करन ताथिया लागान। মণি দেখাইয়া দিল কুমদমোহনে। ভাবিছে ছুজনে হেরে ছুজনার কপ। किरमात्री कश्टिक मानी ना प्रिथि चक्ता।। জাহা মরি ওরে বিধি গড়েছে নির্জ্ঞান।
কদরের ধনে সদা রাখিব যতনে।।
কাল লইরা করে নৃপের কুনার।
ধনীরে ইঙ্গিতে কন অধীন ভোমার।।
তব প্রেমে মজিলান দেখ রেধ ধনী।
তাজনা তাজনা মোরে সুধাংশুবদনী।।
তঞ্জলে ইঙ্গিত করে কহিছে কিশোরী।
কদরের ধন এস ক্লেক্সা করি।।
ভোমারে জীবন সঁপে যুড়াইব প্রাণ।
তুমি মম ধন প্রাণ তুমি ধ্যান জ্ঞান।।
ত্জনের প্রেমে মজে ভাবিছে তুজনে।
হেরিরা গোপনে রাজক্ষ ঘোষ ভনে।।

কুমদের নিকটে কিশোরীর স্বর্ণের বাঁশী প্রেযণ ও কুমদে: নিশিতে কিশোরীয় বাবে গমন।

পরার।

ভূবর্ণের বাঁশী এক কিশোরী যতনে।
মণিরে দিলেন দিতে কুমদমোহনে।
নিত্য যামিনীতে তারে আনিবে এখানে।
তুমি তিনি ভিন্ন যেন অন্য নাহি জানে।
কহিবে তাহারে করিতে বংশীর ধনী।
আসিবার কালে মম বাসে গুণমণি।।
শুনিলে বাঁশীর ধনী গ্রাক্ষের ছারে।
রক্ষু ফেলি দিয়ে তুলি লইব তাহারে।
বাঁশী লয়ে নাপিতিনী চলিল তবনে।
কিশোরীরে ভূষি যায় বিনর বচনে।।

कुमन कामिनी।

मनिद्र विषोत्र निद्य ভাবিছে किर्मादी। কতক্ষণে সুউদিত হবে বিভাবরী।। কেমনে হেরিব আমি সেই গুণাকরে। না হেরে তাহারে মোর কদর বিদরে।। মণি গিয়ে উপনীত হলো নিশ্ব বাসে। কুমদ ধনীরে ভাকি বিনয়ে জিল্পানে।। कि दंगिता कर मामी तम विश्वमनी। मिलन विश्रास खांकि मिलशाबा करी।। নিবেদন করি শুন নুপের নক্ষর। নিশিতে তাহার বাবে করিতে গমন।। ভোমারে কংহছে মোরে করিয়ে বিনয়। ভার চিত্র বাঁশী এই দেখ মহাশয়।। গোপনে নিশিতে গিয়া বাজাবে বাস্থী। खिनिटल दीनीत भनी जामिए किल्याती॥ এই বাক্য কৃছি মোরে পাঠালে দে ধনী! তার চিহু বাঁশী এই লছ গুণমণি।। চলিলাম আমি বানে নিশিতে আসিব। ছজনার মন ছুঃখ আজি যুচাইব।। বিদায় হইয়া মণি যায় নিকেডনে। क्यम खाविष्ट्र मत्न याष्ट्रेव (क्यान।। কখন হইবে অস্ত আজি দীনমণি ! क्रक्रमा आकि स्त छेनत तक्षमी।। বারেক হেরিয়া মন করেছে হরণ ! মিলন বিহনে মোর দহিছে জীবনী।। ওহে নিশাকর ভূমি হও হে সদয়। मिलाहेबा त्वर खाद्य स्ट्रिय खेमब ॥

তপন তাপেতে ততু হলো তার তার। कित्मात्री विश्रम आप मरश निवासत ॥ কিশোরীরে মাহি হেরে হেরি খুন্য ময়। তার অদর্শন কাণে বিদীর্ণ হৃদয়।। এইরপে ক্রমে অন্ত হলো প্রভাকর। सूडे पिछ सूथांकत लास सूथकत ॥ र्श्वाद्य तकनी माहि सूर्वाट ज्विष्ट । কিশোরী নাথের আশে নিয়ত ভাবিছে।। कुमम सूराष्ट्र कति वाँमी लट्डा करता। মণিরে ডাকিতেছেন হরিষ অন্তরে।। এন মাদী চল ঘাই যুড়াতে জীবন। শুনিলে তাহার ধনী যুড়াবে ফ্রবণ।। - মণি বলে কহি শুন নুপের ভনয়। উতলার কর্মা বাছা এ সকল নয় । नद्भारित कर करन गाँदेत यहान। **(मर्थ वाहा (यम नाहि कार्त अना करन!**! কিঞ্চিং বিলম্ব কর কিঞ্চিং রজনী। হইলে ভাহার বাসে যাব গুণমণি।। সদাগরে সদা ডরি পাছে ব্যক্ত হয়। তাহার কারণে মোর চিন্তা অতিশয়।। কুমদ না শুনে মানা কহে মাসী চল: मा (श्दुत (म विद्नाकिमी द्वारक वरह क्वा। **নে আছে আমার আশে চাহি আশা পথে** ত্রিভূষদে কেহ নাই মোর ভোমা হতে।! মণিরে লইরা সঙ্গে কুষদমোহন। কিশোরীর নিকেতনে করেন গমন।।

গবাকের ভারে গিরা বাজান বাঁশরী।
কুমদে যতনে তুলি লইল কিশোরী।।
জানক্ষে মাতিল দোঁতে হেরিয়া তুজনে
পানাব প্রবস্থে রাজক্ষ ঘোষ তথে।।

कुमम किट्गांतीत त्रशंख अ विवाह। कूमरमत करत धति एकरम किर्माती। বসিলেন লয়ে তারে সিংহাসনোপরি॥ গন্ধ বিবাহ করে করে আঁথি ঠার। সে সভা দেখিতে শোভা অভি চমৎকার।। র্তি রতি পতি সহ হলে। উপনীত। হেরিয়া যুগল রূপ ভাবে চমকিত।। **एस यूर्ग्। नांकि क**ित थुलि निक्र माला। कूमरम्ब शत्न मिल शामि माधु वाला।।। चल इटड छगनिधि इटन मम नाथ। ত্যজিয়া যাওনা মোরে করিয়া জনাথ।। তুমি মণি আমি ফণি অধিনী তোমার। ত্রিভূবনে ভোমা সম কেহ নাহি আর।। তুমি মম ধন প্ৰাণ ভূমি ধ্যান জান। তোমারে হারালে নাথ ত্যজিব এ প্রাণ।। রায় বলে বিনোদিনী কর কেন খেদ। তুমি আমি এক প্রাণ দেহ মাত্র ভেদ।। कौरन मा इत्ल खन्छ विटक्ष् म इत्ना। যুচাইব মন ছুঃখ যাতনা রবেনা।। সভাস্থ সকলে গেল নিজ নিজ স্থান। मिंग वर्त किर (माँटि क्र खर्मान।।

ঘটক বিদার কর সভা ভঙ্গ হয়। শুনিয়া দিলেন হার নুপের তনয়।। কিশোরী হাসিয়া কর কুমদমোহনে। ছতি গুড় দিন আজি মম নিকেতনে।। পুর্ণ শশধরে হেরি হৃদয় মাঝারে। ধরি পায় রসরাজ তাজনা আমারে।। মানদে প্রতিমা আমি করেছি নির্মাণ। विष्फूट एदा खननिधि मित विलिमान ॥ যতনে আকিঞ্চনে সাজায়ে সারি সারি। गानम देनविद्य कति भिव खिख्य वाति।। জানন্দ সুগছা পুষ্পে করিব পুজন। बीअ धूश हरत भांत कीवन सोवन ॥ প্রণয় বসন সমাদরে পরাইব। কুল মান অল্ডার অঙ্গে সাজাইব।। विविध विधारन रमश विविध ध्वकां । বিবিধ ভূষণ মম বিবিধ বিহার।। কহিলান গুণধাম ভোমার সদনে। भूदा' अ मरनद गांध रहदिव नम्रत्न ।। বাসনার হে বাসনা পুরাও বাসনা। বারেক দেখাও ৰূপ নাজিয়া অঙ্গণা। ভা হলে যুড়াবে প্রাণ যাবে মন ছঃধ। क्षमग्र-कानाम विक्रिक श्रव सूर्थ।। রায় বলে সুধায়খী দেহ অভরণ। রমণির রূপ আজি করিব ধারণ।। পুরাব মনের সাধ সাজিয়া কামিনী। विष्कृदद्रत विशव्यन दिव विदनोहिनी।।

कूमन कांत्रिमी।

অনক হেরিয়া রক্ষ প্রফুল বদনে। যিনি রতি রতি বাণ হানে ছুই জনে।। প্রেমের ভরকে দোঁহে আতক তুকানে। পজিয়া যুগলে বাহে খুগলের টানে॥ रगोरन छत्रनी একে छक्नन छत्रनी। नदीत्न अवना वाला स्वपारक वन्ती । জানাড়ি অবোধ মন জবোধ কাণ্ডারী। সাধা কি জমাতে পারে দে সাগরে পাড়ি। নাগর সাগর তাহে রসের সাগর। ष्यांनरक ष्यांनरक शांत रहा खर्गकत।। কিশোরী ভালোক ধজি করিয়া ধারণ। উল্লাস আহলাদ বেগে করেন গমন।। পিয়ীতি ভুকানে ধনী হলো বাৰচাল : কুমদ বাহিয়া যায় দিয়া ভক্তিপাল। ধরিয়া নাথের তরি সাধুর কুমারী। র্যতনে যে সাগরে জমালেন পাড়ি॥ **७३ करल क्यर मनाबाद धनी माती।** নিত্য নব রঙ্গ করে কিশোরী কুমারী।। ष्मानम कोजुदक षष्ठ शहेत तसनी। व्यानत्म कुकुछे शन कतिरहरह धनी।। कूमन विमात्र रुख ठलिन दौनात्र। পুর্ববমত রজ্জু দিয়া কিশোরী নামাধ।। যতনে হেরিছে দোঁতে দোঁহার নয়নে ! রচিয়া পরার ছম্পে রাজকুক ভনে !!

कुमन कामिनी।

কুমদ কিশোরীর মান। जिलामी।

এই কপে ছুই জনে, নিভ্য নিশিতে গোপনে রঞ্জাসে পোহার রজনী।

वाह वरल विस्तामिनी, अन गरंबस गामिनी, সভা বাণী কহ মোরে ধনী।।

आक्षि मिवरम भग्नत्म, मिर्दाह आमि में में नि তোমার গুহেতে অপরপ।

किनि शुर्न मगधर, এক পরম স্থাসর,

ति क्लित ना (मर्थि नक्ला।

লইয়া তাহারে সুখে, আছ বসিয়া কৌতুকে, निहान एक करत निहां अन।

(इनकाल हांद्र जानि, नियुष्ठ वांकांत्र वै:नी,

त्म ब्रावटक माहि कव मन।

कांत्रि ভाविनाम मत्न, शूनः कित्र गांव वतन,

মুত্রে মূত্র সমাদর।

মূতনেতে বলে ঘাহা, পুন: নাহি খাকে তাহা,

পুরাতন হলে অনাদর।।

পরে নিজা হলো ভঙ্গ, সে অবধি হর্ষ ভঙ্গ, মনেং মানি ধিৎকার।

यपि यात्र अ कीवन, नाहीदत ना पित यन, রমণীর ঘটতা ব্যবহার।।

অন্তরে গঃল তার, ভাষরে সুধার ধার, হাসিতে ঋপুর হরে মন।

मत्नाहता मन होता. वाक चाट्ड (मर्थ धता. मना घटने अभिका घरेन।।

अभिन्न किरणाती दश्, जाल मन विश्वमंत्र, নারী রহে পুরুষের মত। शुक्रव गत्न भरह, धक्या गकरन करह, নারীরে মজায় অবিরত।। হইলে তার প্রেমাধীন, ততু ক্ষীণ দিন দিন, তার ছঃখ না হয় বর্ণনা। विक नाथ कष्ट इम्र, किमरन इरना धाडाम, करताना मानीरत अवक्षना !! ला हरण छ। जित आग, जीवरन जीवन मान. তোমা বিনা জন্য নাহি জানি। তুমি মম গতি মতি, তুমি সর্কস্ব সঞ্চাত্তি, শুন নাথ অধিনীয় বাণী।। ভাজ নাথ অভিমান, মানে রাথ মরি মান. এ অধিনী আত্রিত তোমার। ধরি পায় হে রাজন, শোক কর সম্বরণ, কিবা দোঘ দেখিলে আমার।। **एटत छव फार्यास्थ,** विमतिरह सम वूक, প্রাণ যায় কথা কও নাথ। व्यक् चटन योत्र (थेटन, व्यात वाहि ना विटाइटन, কেন হান হৃদে বজাঘাত।। ৰাহি গেল অভিমান, মানে রাধি নিজ মান, का कियान यश हरता धरी। তেকে निक अञ्जर्भ, वनत्म एकि वस्त, व्यद्धायुट्य सूधाः छ-उपनी ॥ কুমদের গেল মান, হেরে তার অভিমান, কিশোরীরে সার্ভ পাঙ্গেশকের

क्यम कामिनी।

ভাজ ধনী অভিমান, না বুবে করেছি মান,
সদা মম কান্ত বিদরে।।
হেরে বিরস-বদন, দহে প্রাণ সর্কক্ষণ,
ক্ষম দোষ রাখ মম মান।
ধরিয়া ধরণী পার, সাধে কত বুব রায়,
তবু নাহি গেল অভিমান।।
বাড়ে ক্রমে মনঃ ছঃখ, ঘুচাও মনের ছঃখ,
যায় ধনী জীবন আমার।
প্রবল মান্তরঙ্গ, হেরিয়া দোহার রঙ্গ,
রাজক্ষ রচিল প্রার।।

कुमरमंत्र मानलकः।

कुमरमादन कम् छन विद्यामिनी।

किलाम वादम खन्छ दहेल कामिनी।।

क्राप्त कित्र वाजा करतिह वामना।

मदन दिश्व अधीदन सूधा छत्र मना।।

क्राप्त यि दिँ के थाकि जामित श्रम्माद।।

क्रित्रा कुमन जान श्रवादक खादत।

क्रित्रा कुमन जान श्रवादक खादत।

क्रित्रा कुमन करत्र वमान जामदत।

क्रित्रा युगल करत्र वमान जामदत।

क्रित्रा युगल करत्र वमान जामदत।

क्रित्रा युगल करत्र वमान जामदत।

क्रित्रा विचना वेंचू याहर्षिक जासदा।

क्रिप्त वादम्य द्या कित्र द्र वाथ।

याहर्ष वादम्य क्रित्र कित्र जामाथ।।

जाल क्रम महा धर्मा जूमि दह स्वन।

क्रित्र क्रान्तिमाम हर्ला जाद्र श्री द्रापन।।

ভুজ পাশে বাধি ধনী করিছে চুম্বন। श्रित यन कुश्च हरता विष्कृत्ह मितन । আলিক্ষন আলাপনে পলায় সন্তাপ। যুড়াল ভাপিত প্রাণ গেল মনস্তাপ।। রাম বংল গুণি ধনী পলকে প্রলয়। তোমারে না হেরে দেখি সর শ্নাময়।। নিয়ত বাসনা রাখি নয়নে নখনে। তোমারে তাজে কি পারি ঘাইতে ভবনে।। কিশোরী কহিছে নাথ জেনেছি হেনন। কেন হে বাছাও ছঃখ কর জালাতন। পুরুষ এমরা নহে এক ক্লে রভ 🏲 ছাত্রিনহ ফুলে মন বাবে ভাবিরত।। থাকিলে সদলে জরে মহা সমাদর। আন্তর হইলে ভাবে অন্তরে ভারের গ (रमकादन कुक्रिक रुद्धिक स्मी। हुई स्राप्त वानिल श्रास्त्र १हेन हसनी।। कूमन करिटक धनी (पर्दणा विश्व । আদিৰ নিশিতে পুনঃ নাৰ হে বাসায়॥ প্রমী বলে গুণনিধি দিবসে হেরিছে। নিয়ন্ত ব**্দনা মোর ভোমারে রাখিতে**। कि कति (१ एक्स खरन मनाहे एवाहे। নতুবা সদত ল**নে জীব**ন বুড়াই 🛭 দিবলে চাহিয়া পথে থাকি দককণ। নিয়ত তোমারে নাথ করিছে অরণ। সতা কহিয়া যুচাও মনের জাঁধার। সত্য করে কহু মোরে নাথ ভূমি কার 🕫

শুনিতে ভোমার বাণী আছে হে বাসমা।
কাতারণা অধিনীরে করো না করো না।।
কুমন কহিছে ধনী ভোমা সম আর।
ক্রিত্বনে কেহ নাহি হেরিছে আমার।।
কুমি সম ধন প্রাণ তুমি হে জীবন।
হেরিলে তোমারে হয় ছঃথ বিমোচন।।
তুমি তরু আমি লতা থাকি এক ঠাই।
তোমারে লইয়া সদা জীবন যুড়াই।।
অভিমান গেল দূরে বিজেদে মিলন।
পায়ার প্রবন্ধে রাজক্ষ ঘোষ কন।।

ইন্দ্রকান্ত নামে অতি শান্ত সদাগর। 🗀 भरत मार्त कुरल भीरल नर्कारण सुग्नत ।। কিশোরী তাহার সুত সাধু সুপণ্ডিত। বিহারের লাগি মনে সদত চিন্তিত।। सूवर्णत वानी अक किशारक रम धनी। প্রভাহ নিশীতে যান করে ভার ধনী।। গবাক্ষের দ্বার হতে রজ্জ্ব ভারোহণে। व्यावम करतम बारम मिन्ना मररामित !!. প্রভাত হইলে পুন: আসেন এথানে। ত্তজনের বাক্যমায়া তুই জনে জানে।। মণি নাপিতিনী বাসে করিল গ্রন : कामिनी कुमरम कम्र वानीत कात्र।। কোথা পেলে গুণনিধি সুবর্ণের বাঁশী। বিবরিয়া কর শুনিবাবে অভিলাঘী।। গোপনে লুকায়ে বাঁশী রাখিস কামিনী ! ক্রমে সুধাকর সুপ্রকাশ দিব। জিন।। विकास नामश्री नाना करत कलरयाता। কিশোরীর বাসে বেতে করেন উদ্যোগ।। मा भाग पुष्टित दांगी कुमण्ट्याहम। বাঁশীর কারণে হন আকুল তথন।। হায় বাঁশী কোথা বাঁশী কোথা বাঁশী পাই। কেমনে ভাহার বাদে বল আমি যাই ॥ না পাইলে বানী মম মরণ মকল। त्म वं भी विश्वत आग श्रक्ट ह हक्ष्म ॥ विभवं (पश्चित्रा थनो कानिल करुदत्र। विनया विकारम नात्थ शतम व्यानस्त ।।

কি লাগিয়া হেরি নাথ বির্বাস বদন। ক্লার ছঃখে দেখি ছবি কহ বিবরণ।। রায় বলে রসবভি মন নহে স্থির। গঙ নিশি সপ্প দেখে হভেছি তান্তির।॥ কামিনী কহিছে নাথ করেছি মনন। भागतम खदाबी शन कतिन शक्स।। बर्ग किया नष्ट विभि कतित स्थान।। ्रिधि कृष। करत किमा कतालरम्मा ॥ নিজ্জনৈ গুহের মধ্যে থাকিব রাজন। থাকিয়া একাকী আমি করিব পুসন।। রায় ভাবে মনে মনে কিলোরীর ৰূপ : वंभी मा भाडेश परा खादा कड कथ ॥ খার হার প্রাণ যায় করি কি-উপায়। ध्वरनारम क्षमाम स्ट्रत उन्दर्व ध्यान यात्र ॥ काथाइ उहिल वन (म विश्वनमी। सूर्यंत्र यामिनी इत्ला कुः अंत त्रक्षती ।। क्ष्माकत कूडेनिक सामात्र ভार्तारक। कादा भर्ग स्टार काक महिल्ह (शरमका। कति ताककृष् कश्र मुत्भत कृगात । ভোমার দিয়েছদ ক্ষেদ কোঝা সাধ্য কার॥ কথন ভক্তর হত কথন অসন।। क्थन वाकारत वांभी कूला उ अक्रमा॥ मलिएक मालको स्मार्ट्स कर्ट्स कामिनी। রাথ রাথ মম বাণী আমার নন্দিনী । গোপনেতে সপ্ত ভরি করগো শাব্দন। (यन नाहि कादन (यन अगर वाक्रम !)

কুমৰ কামিনী।

ভাজা মাত্র চুই দাসী চলিল সত্তর। সপ্ত থানি ভবি দেখি অতি মনোহর।। নিৰূপণ কৰে দোহে কবিল গমন। পরেতে কামিনী ভরি করে আরোহণ।। দাসামা লইল ধনী তরির ভিতরে। তিন জনে পুরুষের তিন রূপ ধরে।। মল্লিকে মালভী দোহে হল চোপদার। কি কৰ দেখিতে শোভা অভি চমৎকার।। কাহিনী আপুনি ধনী হলো সমাগ্র। ক্রান্ত উঠিল সবে তরির উপর।। कोकानां कि शरन करह सूधार क रमनी i দ্বাদ লাহিয়া চল সকলে তর্ণী।। পুনঃ নিশি অবসানে আসিবে এথানে ৷ এ সকল হাক্য বেন কেছ নাহি ফানে। क्षिमीत जास्मरण्ड धूनि मख छति ! **ेलिन किश्चिद मूत्र कांगी প**विरुदि॥ প্রভাত যামিনী হলে। বাহিছে তর্ণী। মহা শব্দে করিভেছে দামার ধানি।। মণিকর্ণিকার ঘাটে ভরি উপন্নিত। সহা তরি দেখি দবে ভাবে চমকিত।। পরেতে পাঠান দুত সাধুর ভবনে। বিবাহের বিবরণ লিখিয়া যতনে !! लिशि लाख इर्व मान माल ही हिन्छ। मविद्याय मामाभारत नव निरमित ॥ শুনে সাধু সদাগর আপন গৃহেতে। কামিনীরে লয়ে যাম করিয়া সঙ্গেতে।।

দিলেক উত্তম স্থান করিয়া যতন। शरतरा बिकारम माधु मन विवत्न।। कामिनी कहिएह दांग क्नीं है नश्र । সুখ্যম রাম নামে তথা সদাগর।। ভুবনমোহন নাম তাহার তন্ত্র। যর্চ মাহা হলো গত তাজিয়া আলয়।। সকর করিতে ঘাই সিল্ট মগর। তথা হতে আদিয়াছি তোমার গোচর।। কিশোরী নামেতে আছে তোমার কুমারী। পরমা কপদী নাহি জুলা তার নারী।। বিভা করিবারে আসিয়াছি মহাশয়। জুরিত বলগো মোরে ফেনা যুক্তি হয় । শগর কছে বাছা শক্তি কর মন। ভোমারে মম সুতারে করিব অর্পণ il হেরিয়া তোমার কপ যুড়ায় হে প্রাণ। সম্ভান নাহিক মম তুমি ধ্যান জান।। কিশোরীরে দিয়া বাছা ভোমারে পাইব ! নিয়ত নয়ন ভবে তোমারে হেরিব 🛭 লারীর চাত্রী হেরে ভাবিগো আকাশ: কবি রাজকৃষ্ণ ঘোষ করিল প্রকাশ।।

কামিনীর কিশোরীর সহিত ধিবাহ ও তরি আরোহণ সদাগর রমণীরে হরিষ অন্তরে। বিবাহের সবিশেষ কহেন আদরে। কণিট নগরে বাস সাধুর নন্দন। না দেখি সক্রপ ৰূপে মদনমোহন।



কিশোরীরে দেই চাহে বিবা করিবারে। যেবা যুক্তি হয় বল জিজ্ঞাসি তোমারে।। জামতার যোগ্য বটে বাদে মন দিতে। প্রকাশিয়া কহ মোরে যেবা আছে চিতে।। নিবেদন করি নাথ বিনয় বচনে। কন্যার বিবাহ দিতে অয় এইক্ষণে !! কি জানি দিনের গতি বলা নাহি যায়। कथम अहारि कांव कि निधि महीत ॥ অভএব কহি আনি করিতে নির্শাহ। উচিত ছায়ায় নাথ দিতে হে বিবাহ।। রম্বীর বাক্য শুলে লাপ স্থাগর। গ্ৰহতাৰ্য্য আনিহারে পাঠান কিন্দ্র ।। ভাষালে আচার্যা হার দিবা করে কির। **७ ७ वर्**ध विदाह भिल्वा किस्मार्वीड । विवाद्धत भारत याहा आद्य भुकाभारत। ক্রমতে নিকাগ করে সুখে সদাগর।। काभिनी किटमाती पाटर इंडेल निलन। कुमरम किरमाही करम श्राता विश्ववता। निश्रष्ठ काभिनी थनी थाटक मादशास । **छाङ इर छन्ने कथा शाह्य गांव जारन।**। ওখানেতে ইন্দ্রকান্ত জানে না সন্ধান। मद्यत जेलारम करत नाना अर्थ मान ॥ জামতারে লয়ে সাধু আনন্দিত মনে। ভোজন করান সুখে জাতি বন্ধাণে।। काभिनी विनद्य क्य माधुत मनन। অবধান নহাশয় করি নিবেদন।।

एक्ट इरहाइ यम गाँहेर्ड जानहा চিত্রেভে নাহিক সুখ कंग्रे नाভিশয়॥ ছয় মাস হলো গত ত্যাঁজয়ে নিবাস। নিলট সহরে করি সুখেতে প্রবাস।। এখন বিলম্ব আরু সহেনা সহেনা। र्घ जक नना मन श्रीताथ मार्चना !! গুনি জামভার বাণী ইন্দকান্ত বায়: রজত কাঞ্চন কত দিল জামতায় : কিশোরীরে সঙ্গে দিল হরিষ অন্তরে। আপনি আইল সাধু তরির উপরে।। আমতারে সমাদরে ভূষিয়ে বচনে। কিঞ্চিৎ বিলয়ে জান আপন ভবনে।। कामिनी मालडीरत करहन वीरत धीरत। এ কথা না কর ব্যক্ত কছু কিলোরীরে।। কিঞ্চিৎ দুরেতে জরি রাখিবে যুক্তমে। যাগাতে যাইব পুনঃ তুজনে গোপনে।। তরি হতে ছুই জনে উঠিয়া সম্ভৱে। ভাবিয়া চিভিয়া জান কুমদ গোচরে॥ নারীর চাতুরী হেরে ভেবে প্রাণে মরি। ताल कृरक वास्त्र कृष्य मिश्र भागवति।।

কামিনীর কিশোরীর সহিত রহান্ত।
কুমদের বাশী লয়ে কিশোরীরে ধনী।
আনন্দে দেখান হাসি সুধাংশুবদনী।
কাহার বাঁশরী এই দেখলো চাহিছা।
কি গোষে সে জনে ধনী দেখা না চাহিছা।

কেন হলো সে ভাবাবের অভাব এখন। এक वादि रम धरनदि इटल भामत्र।। একি ভাব অসম্ব সম্ভব না হয়। মণি মাসী বল কোথা গেল এ সময়।। কিশোরী পাইয়া ভয় ভাবে মনে মনে। প্রোণনাথ এ সংবাদ জানিল কেমনে ॥ दक्रमास कार्राह वं भी निवा दकांत क्रमा ভবেত জেনেছি এর সব বিবরণ।। হাম বিধি রাখ প্রাণ কর পরিবাণ। কলস্থ সাগরে মান রাথ ভগবান।। কিশোরী কহিছে নাথ দিওনা জাতনা। অধ্বিধে কেন দাও বচন যন্ত্ৰ।।। ৰানিত্ব মতন সদা থাকিতাম বাংগ। কাই নদা স্পত্তিত জনকের ভাগে। क्रिंस अमन क्या क्र खन्मांचे। সতা মিথ। আনে সব চন্দ্র দীনমণি।। কামিনী কহিছে ধনী আহা মরি সরি। ব্ধিংভে ক্ভারে লবে নিত্য বিভাবরি॥ কে যেত গৰাকের ছারে রজ্জু আরো**হণে।** ভাষারে ভুলিলে ধনী কিসেরি কারণে।। তরি হৈতে নৃণস্কুভা উঠি সংগোপনে। **छेलभीक इटला** शिवा कृषण मण्टन।। পুরুষের বেশ সব লুকারে রাখিরা। क्रयरम्दत्र क्य शिक्षा विनय् क्रिया॥ क्याथाय किर्मातीनाथ कर महागत्र। যার লাগি হয় তব বিদীর্ণ হৃদয়।।

क्मन आहि त्म वल स्थारक वमनी। शांद्र ना (इदिटल जांव मित्र तक सी।। त्म अथन (कृथा नाथ कर न्याहात। মণি মাদী গেল বল কোথায় তোমার॥ নিত্য নিশীতে যেতেহে বাজায়ে বাশ্রী। কোথার এখন নাথ প্রাণের কিলোরী।। द्राप्त मान मान जाति कानिक (क्यान। মণি মাদী আদি বৃত্তি বলেছে গোপনে।। কুমদ কহিছে ধনী জান কত হল। পরের কথার মন করে। না চঞ্চল ।। कामा यह दिटनानिनी खाना नाहि आति। কহি শুন বিশেষিয়া এই সভা বাণী।। এবার নিভান্ত বাসে করিব গমন। বৈরক্ষ না পরে খন সৰা উচ্চাটন :: শাধ্যা সভী পতিৱত। কামিনী কুমারী। त्रा बद्ध्य करत् जूना रहति माहि माती ।।

কুমদমোহনের আক্ষেপ ও তরি আরোহণ। শুনিয়া বিবাহ কিশোরীর ভাবে রার। নেত্রে বহে সত ধার। ধরা নাহি যায়।। হার বিধি একি দায় ভাষালে পাথারে। এ যেন চোরের ধন লয় বাটপারে।। বছ ভাগে৷ পেয়ে তাম ছিলাম আনন্দে! **७४न (क्यान इव नमा निवासला ।** সে আমার ধন প্রাণ গজেন্দ্র গামিনী। मा दिहित्व परह आंग रिवम श्रामिनी।।



তাহার সুখেতে দুখী থাকি সর্ককণ। ভার কপ হলে মনে বিরুম বদন ।। নিয়ত নয়নে হৈরি সহনে দপনে। এখন তাহারে ভাবি হেরিব কেমনে।। সে ধনী আদার হরে লয়ে মন প্রাণ। এখন ভাতির ভর্ণির করিল প্রস্থান ।। হায় হায় প্রাণ যায় 5:4 कব কাম। আমার বোধার তথা বাক্ত করা দায় ট বিষ ওচিধির ভার হাসি ভাল বামি। ংহারলে ভাহার হাসি নাশে ছঃখ রাশী।। यथन भीदबंख इन्छ पिता थादक मनी । সেশোভা দেখিতে শোভা বিজ্ঞাত বয়ণী ্য ক্রিনীরে কন রাম করিছা যতন। हल राहिद्राविक काशन खरन।। এপানে খাজিতে জার নাহিক লাগনা। वादम शिह्य हल कि है पुनाब साराना । কামিনীর সপ্ত ভরি ছিল যে বাজন। তাহাতে জুমদে লবে করিল গ্রন্থ। इमिट्ड कुमरम धनी रमधात्र किल्माही। বলে এরে চিত্তে পার দেশ রূপাকরি।। हेशत काथाय वाग किया नाम श्रा বিবরিষা প্রাণনাথ লহ পরিচয়।। কটাক্ষ করিরা গেল ছজনার চুঃখ। छेमग्र वमख इटला छेथलिल सूर्य ।। রায় বলে বিধুমুখি পাইলে কোখায় ৷ क्रमन क्रिया बद्ध जानित्व (स्थाय।

ভোমার অসাধ্য কিছু নাহি ত্রিভূবনে। তেমার সনান নারী না দেখি নয়নে।। कार्मिनो कहिए नाथ कदि निर्वान । মণির নিকটে শুনি ভব বিবর্ণ।। শিবানী সেবিব যবে বলিছে ভোমার। সেই দিন গিয়াছিল জামি হে ভথায়।। সদাগর হয়ে জবে আমিহে জর্ণী। ভাহার হৃত্যক জান নাচি গুণমণি।। অবিভান্ত যাহে তরি নৌকা বাহিলণ। বায়বেগে ভীর সম করিছে গমন।। ভাহে হরি হরি ধনী করে অবিরতঃ পশ্চাতে বাৰিয়া যায় দেশ কত শত। দীনমণি গুণমণি আকুল অন্তরে। আবুল হইয়া জান ক্ষন্ত গিরি পরে।। নিশাকর সুথকন লবে সু উদিত। কুমদ হেরিয়া হলে। পুলকে পূর্ণিত।। সেই নিশি সেই স্থানে বঞ্চিল সুখেতে। প্রভাতে উঠিয়া বাহে নাবিক গণেডে।। কেহ বলে হতি হয়ি কেহ বলে ভারা। কেই বলে নিজারিণী তার ভব ছারা।। অপার হরির লীলা বোঝা সাধ্য কার। রাজক্রক কহে পত্ত রচিয়া পরার।।

কুমদমোহনের সুরাট নগরে উপানীত। বাহিতে লাগিল ভরি নৌকাবাহি গণে। সুরাতারে থার তরি প্রম গমনে।।

कूमन कामिनी।

कक्षा माना (मन वक्ष मिन शहर । उपनोट रत्ना निया भूताहे मनदत्त । কুমদ্বেশাহন রায় উঠিরা সম্বর। চলিলেন বাসে হয়ে হরিশ অন্তর।। দেখেন আপন শোকে জনক জননী। मन हुः एथं करत वाम निवम तक्षती।। অবিভান্ত শোকবারি বহিছে নয়নে। द्गरम ना १२८त कान रखाइ क्षत्रा।। অন্য কথা নাহি দণা কুলদমোহন। नर्भान दुभन वटन क्रांत्रन (हामित्र)। क्ष्मदनत राग क्रार्थ रहतिया नम्मदन। कां भिनी कि भारी क्रिंट्र आनिना एकरम। কূলবধু গণে সবে দেয় উলুধানী। पूर्विक शता (श्दर करक करनी।। मीन दीम विकाश रा शतिम अखात। রজ্ঞ কাঞ্চল কন্ত বিভয়ণ করে।। কংহন কিন্ধর গণে নূপের ভনয়। তরণী হইতে দ্রব্য আনিতে আলয় 🛭 আদেশে কিন্তর গণে আমিল ছরায়। दनोकावाहिशद्ध पिल तक् भन तात्र।। প্রণাম করিয়া সবে চলিল সম্বর। छत्री थूलिया मत्त रहेल खरुत ।। • कांकि वक्तभारमभीत कानारम नकरन। ट्यांकन क्यान गर्व महा क्षेत्रला ॥ মিন্টার সামিত্র করু পারেশ শিক্তক (जाकन कहिरह कुछ यह के शिक्स

विन्द्रं विन भटा पूर्व विशे शक्त छात ।

कान कीर्य भरी। हैस्स कान गर्माई माता।

काम कार्य भरी। हैस्स कार्य कार्य ।

काम कार्य कार्य कार्य कार्य ।

कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य ।

কালি চীন চুৱাচার, জাধিক কি কব আন সংক্ষেপ্তে কবি কিল পূর্কে বনবাল কালিপুরেতে কবি, বিল পূর্কে বনবাল তালি কথা লিভা মহাশাল কংগ্রি লাকুল কালে, হরিছে আলি অকালে, লে অলুধি পোনে ভবন। কিলেকুল নাম, লানা গুলা গুলাম, তিন মুলা কৃতীর নামন। কিলাকে ভালিলোকালেতে হরে, কিক্রি লাকে ভালিলোকালে।। কিক্রি লাকে ভালিলোকালে।।